B.Ed 4th Semester Exam Guide (Previous Year Solved)

Course: 1.4.8B Knowledge & Curriculum (Part-II)

2 Marks Question

1. Write the definition of Curriculum. পাঠক্রমের সংজ্ঞা লিখুন। पाठ्यक्रम की परिभाषा लिखिए। **2018, 2021, 2024**

Ans: प्रस्तावना: शिक्षा प्रक्रिया का मुख्य केंद्र बिंदु पाठ्यक्रम (Curriculum) है। यह केवल पाठ्यपुस्तकों की सूची नहीं है, बल्कि शिक्षार्थी के समग्र विकास की एक सुयोजित रूपरेखा है। 'Curriculum' शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द *'Currere'* से हुई है, जिसका अर्थ है 'दौड़ का मैदान' (Race course) । अर्थात, एक निश्चित लक्ष्य तक पहुँचने के लिए विद्यार्थी को जिस मार्ग को पार करना होता है, वही पाठ्यक्रम है।

पाठ्यक्रम की परिभाषा: विभिन्न शिक्षाविदों ने पाठ्यक्रम को अलग-अलग तरीकों से परिभाषित किया है। 2 अंकों के प्रश्न के मान के अनुसार दो महत्वपूर्ण परिभाषाएँ नीचे दी गई हैं:

क) कनिंघम (Cunningham): उनके अनुसार, "पाठ्यक्रम कलाकार (शिक्षक) के हाथ में एक उपकरण है, जिसके माध्यम से वह अपनी सामग्री (छात्र) को अपने स्टूडियो (स्कूल) में अपने आदर्श के अनुसार रूप देता है।"

ख) जॉन डीवी (John Dewey): उनके मत में, पाठ्यक्रम सामाजिक अनुभव की एक निरंतरता है। यह शिक्षार्थी को पर्यावरण के साथ तालमेल बिठाने में मदद करता है।

ग) सरल शब्दों में: पाठ्यक्रम स्कूल के मार्गदर्शन में संचालित छात्र के उन सभी अनुभवों का योग है, जो उसके बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास में सहायता करते हैं।

निष्कर्ष: अंत में यह कहा जा सकता है कि आधुनिक शिक्षाशास्त्र में पाठ्यक्रम कोई स्थिर विषय नहीं है, बल्कि यह अत्यंत गतिशील है। स्कूल की कक्षा में पढ़ने-पढ़ाने से लेकर खेल के मैदान के अनुभव तक—सब कुछ पाठ्यक्रम के अंतर्गत आता है। यह विद्यार्थी के जीवन विकास के लिए एक व्यापक ब्लूप्रिंट के रूप में कार्य करता है।

www.dascoaching.in

2. What are the basic characteristics of curriculum development? পাঠক্রম বিকাশের মৌলিক বৈশিষ্ট্যগুলি কী কী? पाठ्यक्रम विकास की मूलभूत विशेषताएँ क्या हैं? **2018, 2020, 2022**

Ans: पाठ्यक्रम विकास उस प्रक्रिया को कहते हैं, जिसमें शिक्षा के उद्देश्यों और लक्ष्यों के अनुसार शैक्षिक सामग्री, शिक्षण विधियाँ, मूल्यांकन रणनीतियाँ आदि निर्धारित और संरचित की जाती हैं। यह छात्रों के ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और मूल्यों के विकास के लिए एक शिक्षण ढांचा तैयार करता है।

<u>मौलिक विशेषताएँ:</u>

1. **लक्ष्य निर्धारण (Goal Setting):** शिक्षा के उद्देश्यों और लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाता है, जो छात्रों की सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करता है।
2. **सामग्री चयन (Content Selection):** सामग्री का चयन छात्रों के ज्ञान और कौशल को बढ़ाने के लिए किया जाता है, जो उनकी आयु, स्तर और रुचियों के अनुरूप होती है।
3. **शिक्षण विधियों का चयन (Selection of Teaching Methods):** शिक्षण विधियाँ और रणनीतियाँ चुनी जाती हैं ताकि छात्रों का सीखने का अनुभव अधिक प्रभावी और आनंददायक हो।
4. **मूल्यांकन (Assessment):** छात्रों की सीखने की प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए उपयुक्त मूल्यांकन विधियों का चयन किया जाता है, जो शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में मदद करता है।
5. **सामाजिक और सांस्कृतिक प्रासंगिकता (Social and Cultural Relevance):** पाठ्यक्रम में सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक सामग्री और मूल्य शामिल होते हैं, जो छात्रों को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जोड़ने में मदद करते हैं।

ये विशेषताएँ पाठ्यक्रम को एक सुव्यवस्थित और प्रभावी शिक्षण ढांचा बनाती हैं, जो छात्रों के समग्र विकास में सहायक होती हैं।

www.dascoaching.in

3. Write two differences between curriculum and syllabus. পাঠক্রম ও পাঠ্যসূচির মধ্যে দুটি পার্থক্য লিখুন। पाठ्यक्रम और पाठ्य सूची के बीच दो अंतर लिखिए। **2018, 2021, 2023**

Ans: <u>पाठ्यक्रम और पाठ्यसूची के बीच दो अंतर:</u>

1. **आयतन और विस्तार:**

   - **पाठ्यक्रम:** पाठ्यक्रम एक शैक्षिक प्रणाली की समग्र रूपरेखा है, जिसमें छात्रों के लिए निर्धारित शिक्षा, शिक्षण पद्धति, मूल्यांकन और लक्ष्य/उद्देश्य शामिल होते हैं। यह एक व्यापक योजना है।

   - **पाठ्यसूची:** पाठ्यसूची पाठ्यक्रम का एक हिस्सा है, जो किसी विशेष विषय को सीखने के लिए छात्रों के लिए निर्धारित विषय, अध्याय और पाठों की सूची प्रदान करती है। यह सीमित और किसी विशेष विषय पर केंद्रित होती है।

2. **उद्देश्य और उपयोग:**

   - **पाठ्यक्रम:** पाठ्यक्रम छात्रों की समग्र शिक्षा और विकास के लिए तैयार किया जाता है और इसे दीर्घकालिक शैक्षिक योजना के भाग के रूप में उपयोग किया जाता है।

   - **पाठ्यसूची:** पाठ्यसूची यह निर्धारित करती है कि एक निश्चित समय अवधि में क्या पढ़ाया जाएगा और इसे कैसे पढ़ाया जाएगा। यह आमतौर पर छात्रों के दैनिक या साप्ताहिक पाठों के लिए तैयार की जाती है।

4. What are the elements of Inculcation of values? মূল্যবোধ গঠনের উপাদানগুলি কী কী? मूल्य बोध के निर्माण के तत्व क्या हैं? **2018, 2020, 2022, 2024**

Ans: <u>मूल्य निर्माण के घटक:</u>

1. **ज्ञान और जागरूकता:** मूल्य निर्माण का पहला चरण विभिन्न मूल्यों के बारे में ज्ञान प्राप्त करना और उनके प्रति जागरूक होना है। यह छात्रों को सही और गलत, नैतिक और अनैतिक विषयों को समझने में मदद करता है।

2. **अभ्यास:** केवल शिक्षण से मूल्य नहीं सिखाए जाते; इन्हें अभ्यास में लाना आवश्यक है। व्यवहार में मूल्यों का नियमित पालन मूल्य निर्माण के लिए आवश्यक है।

3. **अनुकरण:** बच्चे और छात्र अक्सर अपने आस-पास के लोगों, विशेष रूप से माता-पिता, शिक्षक और नेताओं से मूल्य सीखते हैं। सही मूल्यों का प्रदर्शन और उनका पालन मूल्य निर्माण में मदद करता है।

4. **पर्यावरण और संस्कृति:** मूल्य निर्माण में पर्यावरण और संस्कृति की बड़ी भूमिका है। एक सकारात्मक और मूल्य-समृद्ध वातावरण छात्रों को सही मूल्य विकसित करने में सहायता करता है।

5. **संवाद और चर्चा:** मूल्यों के बारे में नियमित संवाद और चर्चा छात्रों को अपनी राय बनाने और सही मूल्य चुनने में मदद करती है।

6. **आत्म-अनुशासन:** आत्म-अनुशासन मूल्य निर्माण का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह व्यक्ति को अपने व्यवहार और कार्यों को नियंत्रित करने में मदद करता है, जिससे मूल्य की आदतें विकसित होती हैं।

7. **मूल्यांकन:** नियमित मूल्यांकन मूल्य निर्माण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह छात्रों को उनके मूल्य प्रगति की समीक्षा करने और आवश्यकतानुसार सुधार करने की अनुमति देता है।

5. What is meant by social structure? সমাজ কাঠামো বলতে কী বোঝায়? सामाजिक संरचना से आप क्या समझते हैं? **2018, 2021**

Ans: सामाजिक संरचना का अर्थ है समाज के भीतर मौजूद विभिन्न सामाजिक संस्थाओं, संबंधों, नियमों और मूल्यों का एक संगठित ढांचा, जो समाज के सदस्यों की गतिविधियों और पारस्परिक संबंधों को नियंत्रित करता है। यह किसी विशेष सामाजिक समूह के भीतर भूमिकाओं, जिम्मेदारियों और पदानुक्रम की संरचना को दर्शाता है, जिसके माध्यम से समाज के विभिन्न हिस्से एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं और प्रभावी ढंग से कार्य करते हैं। सामाजिक संरचना व्यक्ति को उनके सामाजिक स्थान, जिम्मेदारियों और अपेक्षित व्यवहार को निर्धारित करने में मदद करती है।

<u>सामाजिक संरचना के लक्षण:</u>

1. **संगठित संबंध (Organized Relationships):** सामाजिक संरचना समाज के विभिन्न हिस्सों या सदस्यों के बीच संगठित संबंधों की व्यवस्था है, जो विशेष नियमों और मानकों पर आधारित होती है। इसमें सामाजिक संस्थाओं में भूमिकाओं, स्थान और शक्ति का वितरण निर्धारित होता है।

2. **नियम और मानक (Norms and Standards):** सामाजिक संरचना में विशिष्ट नियम, सिद्धांत और मानक मौजूद होते हैं, जो सदस्यों के व्यवहार और पारस्परिक संबंधों को नियंत्रित करते हैं। ये नियम सामाजिक अनुशासन बनाए रखने में सहायक होते हैं।

3. **सामाजिक संस्थाएँ (Social Institutions):** सामाजिक संरचना विभिन्न सामाजिक संस्थाओं (जैसे परिवार, शिक्षा, धर्म, अर्थव्यवस्था, राजनीति) के समन्वय से बनी होती है। ये संस्थाएँ समाज की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करती हैं और सामाजिक संरचना को मजबूत बनाती हैं।

4. **सामाजिक वर्ग और स्तर (Social Stratification):** सामाजिक संरचना में लोगों का वर्ग और स्तर के आधार पर विभाजन होता है। इसके माध्यम से शक्ति, संसाधन और अवसरों का वितरण होता है और समाज में विभिन्न स्तरों के लोगों की भूमिकाएँ और स्थान निर्धारित होते हैं।

5. **स्थिरता और परिवर्तन (Stability and Change):** सामाजिक संरचना किसी विशेष समय में स्थिर रहती है और सदस्य स्थापित नियमों का पालन करते हैं। हालांकि समय के साथ सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन के कारण सामाजिक संरचना भी बदल सकती है।

6. Write four characteristics of Handbook for teachers. শিক্ষক সহায়ক পুস্তকের চারটি বৈশিষ্ট্য লিখুন। शिक्षक पुस्तिका की चार विशेषताएँ लिखिए। **2018, 2020, 2022**

Ans: <u>शिक्षक सहायक पुस्तिका के चार गुण:</u>

1. **संगठित और स्पष्ट जानकारी:** शिक्षक सहायक पुस्तिका आमतौर पर सुव्यवस्थित रूप से लिखी जाती है, जिसमें जानकारी स्पष्ट और आसानी से समझने योग्य होती है। यह शिक्षकों को आवश्यक निर्देश और संसाधन प्रदान करती है, ताकि वे आवश्यक जानकारी जल्दी और आसानी से प्राप्त कर सकें।

2. **शिक्षण पद्धतियाँ और रणनीतियाँ:** यह पुस्तिका शिक्षकों को विभिन्न शिक्षण पद्धतियों, रणनीतियों और कक्षा प्रबंधन के बारे में मार्गदर्शन देती है। इसमें प्रभावी शिक्षण पद्धतियों के लिए निर्देश, उदाहरण और सुझाव शामिल होते हैं।

3. **अध्यायवार संरचना:** शिक्षक सहायक पुस्तिका आमतौर पर अध्यायवार संरचना में व्यवस्थित होती है, जिसमें प्रत्येक अध्याय किसी विशेष विषय पर केंद्रित होता है। इससे शिक्षकों के लिए किसी विशेष विषय का गहन ज्ञान प्राप्त करना आसान हो जाता है।

4. **मूल्यांकन और आकलन:** इस पुस्तिका में मूल्यांकन और आकलन से संबंधित मार्गदर्शन शामिल होता है, जो शिक्षकों को छात्रों की सीखने की प्रगति का मूल्यांकन करने और अपनी शिक्षण पद्धति को सुधारने में मदद करता है।

7. What is formative evaluation? গঠনমূলক মূল্যায়ন কাকে বলে? रचनात्मक मूल्यांकन किसे कहते हैं? **2018, 2020, 2022**

Ans: सृजनात्मक मूल्यांकन (Formative Evaluation) एक सतत प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों की सीखने की प्रगति का नियमित रूप से निरीक्षण और मूल्यांकन किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया के बारे में जानकारी एकत्र करना है, जो शिक्षकों को उनकी शिक्षण पद्धति को समायोजित करने और विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता बढ़ाने में सहायक कदम उठाने में मदद करता है।

<u>सृजनात्मक मूल्यांकन की विशेषताएँ:</u>

1. **नियमित निरीक्षण:** यह शैक्षणिक वर्ष या कोर्स के दौरान विभिन्न समयों पर किया जाता है, ताकि विद्यार्थियों की कमजोरियों और मजबूत पक्षों की पहचान की जा सके।

2. **प्रतिक्रिया प्रदान करना:** विद्यार्थियों को उनकी सीखने की प्रगति के बारे में तत्काल प्रतिक्रिया (फीडबैक) दी जाती है, जो उनकी सीखने की क्षमता बढ़ाने में सहायक होती है।

3. **शिक्षण पद्धति का सुधार:** शिक्षक सृजनात्मक मूल्यांकन के माध्यम से विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार अपनी शिक्षण पद्धति को बदल या सुधार सकते हैं।

4. **विद्यार्थियों की भागीदारी:** यह विद्यार्थियों को उनकी सीखने की प्रक्रिया में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता है और उनका आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद करता है।

8. State the relationship between Curriculum and Syllabus. পাঠক্রম ও পাঠ্যসূচির মধ্যে সম্পর্কটি বিবৃত করুন। पाठ्यक्रम और पाठ्य सूची के बीच संबंध को स्पष्ट कीजिए।**2019, 2023**

Ans: पाठ्यक्रम (Curriculum) और पाठ्यसूची (Syllabus) शिक्षा के दो महत्वपूर्ण घटक हैं, जो आपस में घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं।

1. **पाठ्यक्रम का हिस्सा:** पाठ्यसूची पाठ्यक्रम का एक हिस्सा या घटक है। पाठ्यक्रम एक व्यापक ढांचा है, जो शिक्षा के समग्र लक्ष्य, उद्देश्य, विषयवस्तु, शिक्षण पद्धति और मूल्यांकन पद्धति को निर्धारित करता है। इस व्यापक ढांचे के भीतर पाठ्यसूची किसी विशेष विषय या पाठ्यक्रम के लिए आवश्यक विषयों और सामग्री की सूची प्रस्तुत करती है, जिसे छात्रों को सीखना चाहिए।
2. **उद्देश्य और अनुप्रयोग:** पाठ्यक्रम छात्रों के समग्र शैक्षिक लक्ष्यों को निर्धारित करता है, जबकि पाठ्यसूची उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विशिष्ट विषयवस्तु और पाठों की सूची प्रदान करती है। अन्य शब्दों में, पाठ्यसूची पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को लागू करने का एक साधन है।
3. **संगति:** पाठ्यसूची आमतौर पर पाठ्यक्रम के अनुसार बनाई जाती है ताकि छात्र निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार शिक्षा प्राप्त कर सकें। पाठ्यसूची पाठ्यक्रम की संरचना के भीतर तैयार की जाती है और उसका पालन करती है।
4. **सैद्धांतिक और व्यावहारिक स्तर:** पाठ्यक्रम एक सैद्धांतिक स्तर पर योजनाबद्ध होता है, जो शिक्षा प्रणाली या संस्थान के समग्र लक्ष्य और उद्देश्य निर्धारित करता है। पाठ्यसूची उस सैद्धांतिक अवधारणा के अनुप्रयोग स्तर पर काम करती है, जहाँ छात्रों को पढ़ाने के लिए विशिष्ट विषयवस्तु और रणनीतियाँ लागू की जाती हैं।

इस प्रकार, पाठ्यक्रम और पाठ्यसूची आपस में परस्पर निर्भर हैं और छात्रों के शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति में एक-दूसरे का पूरक कार्य करते हैं।

www.dascoaching.in

9. Write the full name of NCFTE. NCFTE-র পুরো নাম লিখুন। NCFTE का पूरा नाम लिखिए। **2019, 2021, 2023**

Ans: NCFTE का पूरा नाम **National Curriculum Framework for Teacher Education (राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम ढांचा)** है। NCFTE भारत में शिक्षकों के प्रशिक्षण और विकास के लिए एक नीति-निर्देशिका है। इसे भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत तैयार किया गया है, और इसके उद्देश्य हैं:

1. **शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार:** NCFTE शिक्षकों के प्रशिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाने और उनके पेशेवर कौशल को विकसित करने में मदद करता है।
2. **शिक्षण पद्धतियों में बदलाव:** यह आधुनिक शिक्षण रणनीतियों, पद्धतियों और तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है, ताकि विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव में सुधार हो।
3. **समाज की आवश्यकताएँ:** NCFTE शिक्षकों को बदलती समाज की आवश्यकताओं और नए शैक्षिक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करने का ढांचा प्रदान करता है।
4. **राष्ट्रीय नीति और दिशा-निर्देश:** यह शिक्षकों के लिए एक राष्ट्रीय नीति और मार्गदर्शन के रूप में कार्य करता है, जिससे शिक्षा संस्थानों में पाठ्यक्रम, मूल्यांकन पद्धतियों और शिक्षक प्रशिक्षण गतिविधियों के बीच समन्वय सुनिश्चित हो।

यह ढांचा शिक्षक शिक्षा के लिए एक मानक आधार तैयार करता है और देश की शिक्षा प्रणाली के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

10. What is meant by Hidden Curriculum? লুক্কায়িত পাঠক্রম বলতে কী বোঝায়? गुप्त पाठ्यक्रम से आप क्या समझते हैं? **2019, 2020, 2022, 2023**

Ans: छिपा हुआ पाठ्यक्रम (Hidden Curriculum) उस शिक्षा और मानसिकता को दर्शाता है, जिसे छात्र औपचारिक रूप से शिक्षण प्रक्रिया में नहीं सीखते, लेकिन अपने सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण के माध्यम से सीखते हैं। यह आमतौर पर विद्यालयों या शैक्षिक संस्थानों में सामाजिक संबंधों, व्यवहार, नैतिकता और मूल्यों के माध्यम से होता है।

छिपे हुए पाठ्यक्रम की विशेषताएँ:

औपचारिक पाठ्यक्रम से परे शिक्षा: यह वह शिक्षा है, जो पाठ्यपुस्तक, पाठ्यक्रम या औपचारिक शिक्षण पद्धति में शामिल नहीं होती, लेकिन छात्र इसे अपने पारस्परिक संबंधों, व्यवहार और अनुभवों के माध्यम से सीखते हैं।

1. **सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य:** छिपा हुआ पाठ्यक्रम सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य, व्यवहारिक नियम और सामाजिक अनुशासन सिखाता है, जो छात्रों के भविष्य के व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन को प्रभावित करता है।
2. **प्रभावकारी तत्व:** यह छात्रों के चरित्र, सामाजिक कौशल और नैतिक मूल्यों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो उनके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में लागू होते हैं।
3. **सहानुभूति और करुणा:** छिपे हुए पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्र सहानुभूति, करुणा, सहयोग और नैतिक जिम्मेदारी जैसी महत्वपूर्ण जीवन कौशल सीखते हैं।

छिपा हुआ पाठ्यक्रम शिक्षा का एक अदृश्य पहलू है, जो छात्रों की मानसिकता, व्यवहार और सामाजिक पहचान पर व्यापक प्रभाव डालता है।

11. Give a definition of Teachers' Handbook. শিক্ষকের নির্দেশ-পুস্তিকার একটি সংজ্ঞা দিন। शिक्षक पुस्तिका की एक परिभाषा दीजिए। **2019, 2020, 2021**

Ans: शिक्षक निर्देश-पुस्तिका एक सहायक पुस्तक है, जिसे विशेष रूप से शिक्षकों के लिए तैयार किया गया है। इसमें पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, मूल्यांकन रणनीतियाँ और कक्षा प्रबंधन से संबंधित निर्देश और जानकारी शामिल होती है। इसे शिक्षकों की पेशेवर क्षमताओं को बढ़ाने और शिक्षण प्रक्रिया में सहायता करने के लिए बनाया गया है।

शिक्षक निर्देश-पुस्तिका की भूमिका:

1. **शिक्षण विधियों के लिए मार्गदर्शन:** विभिन्न शिक्षण रणनीतियों और विधियों के बारे में निर्देश प्रदान करता है, जिससे शिक्षक कक्षा में प्रभावी शिक्षण कर सकें।

2. **पाठ्यक्रम की व्याख्या:** पाठ्यक्रम के बारे में विस्तृत जानकारी और निर्देश देता है, जिससे शिक्षक छात्रों को पढ़ाने के लिए तैयारी कर सकें।

3. **मूल्यांकन रणनीतियाँ:** छात्रों की सीखने की प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न मूल्यांकन तकनीकों और उपकरणों की जानकारी प्रदान करता है।

4. **कक्षा प्रबंधन:** कक्षा में अनुशासन बनाए रखने और प्रबंधन रणनीतियों पर सहायक निर्देश देता है, जिससे शिक्षक प्रभावी कक्षा संचालन कर सकें।

5. **पेशेवर विकास:** शिक्षकों की पेशेवर क्षमता और ज्ञान के विकास में सहायता करता है, जिससे वे अपने शिक्षण कार्यों में और अधिक दक्ष और प्रभावी बन सकें।

6. **समस्या समाधान:** सामान्य समस्याओं और चुनौतियों से निपटने के लिए सुझाव और उदाहरण प्रदान करता है, जिससे शिक्षकों का दैनिक कार्य आसान हो जाता है।

इस प्रकार, शिक्षक निर्देश-पुस्तिका शिक्षकों के लिए एक महत्वपूर्ण सहायक संसाधन है, जो उनके शिक्षण कार्यों को और अधिक सफल और उन्नत बनाने में मदद करता है।

12. Mention two principles for selecting the content of the curriculum. পাঠ্যক্রমের বিষয়বস্তু নির্বাচনের জন্য দুটি নীতির উল্লেখ করুন।पाठ्यक्रम की विषयवस्तु के चयन हेतु दो सिद्धांतों का उल्लेख कीजिए। **2019, 2021, 2023**

Ans: <u>पाठ्यक्रम की सामग्री चुनने के लिए दो सिद्धांत:</u>

1. **प्रासंगिकता:** सामग्री का चयन करते समय यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह छात्रों के जीवन से प्रासंगिक हो और उनके वास्तविक जीवन की आवश्यकताओं, रुचियों और अनुभवों से जुड़ा हो। सामग्री छात्रों के लिए अर्थपूर्ण होनी चाहिए, ताकि वे सीखने के लिए प्रेरित हों और इसे अपने सामाजिक, सांस्कृतिक और पेशेवर जीवन में लागू कर सकें।

2. **विकासशीलता:** सामग्री चयन की प्रक्रिया छात्रों के मानसिक विकास और सीखने के स्तर के आधार पर होनी चाहिए। सामग्री इस तरह से व्यवस्थित होनी चाहिए कि यह छात्रों के लिए धीरे-धीरे जटिलता

बढ़ाए और उनके पूर्व ज्ञान से जुड़ी हो। इससे नए विचारों और कौशल के विकास में आसानी होती है और छात्र क्रमिक रूप से गहरी और अधिक जटिल विषय सीखने में सक्षम होते हैं।

13. What is meant by 'elitism' in a curriculum? একটি পাঠ্যক্রমে 'উচ্চবর্গতা' বলতে কী বোঝায়? पाठ्यक्रम में 'अभिजात्यवाद' से आप क्या समझते हैं? **2019, 2022, 2024**

Ans: पाठ्यक्रम में "उच्चवर्गीयता" उस अवधारणा या सिद्धांत को दर्शाती है, जिसमें शिक्षा में विशेष वर्ग या समूह के सदस्यों को प्राथमिकता दी जाती है। यह आमतौर पर समाज की उच्च स्तरीय या प्रभावशाली व्यक्तियों के लिए निर्धारित किसी विशेष मानक या सुविधा की ओर संकेत करता है, जो अन्य वर्गों से उन्हें अलग करती है।

<u>उच्चवर्गीयता की विशेषताएँ:</u>

1. **चयनात्मक प्रक्रिया:** उच्चवर्गीयता के कारण छात्रों के बीच एक चयनात्मक प्रक्रिया विकसित होती है, जिसमें कुछ छात्रों को विशेष लाभ मिलते हैं, जैसे उन्नत शिक्षा, संसाधन या अवसर, जो अन्य छात्रों के लिए आसानी से उपलब्ध नहीं होते।

2. **असमानता:** यह सामाजिक असमानता और असमान अवसर पैदा करती है, जहाँ विशेष वर्ग के छात्र अधिक लाभ पाते हैं और शैक्षिक प्रगति करते हैं, जबकि निम्न वर्ग के छात्र पिछड़ जाते हैं।

3. **शिक्षा की गुणवत्ता:** उच्चवर्गीयता अक्सर शिक्षा की गुणवत्ता और मानक को प्रभावित करती है, क्योंकि यह केवल चयनित वर्ग के छात्रों को विशेष विषयवस्तु और संसाधन प्रदान करती है।

4. **सांस्कृतिक और सामाजिक प्राधान्य:** यह आम तौर पर उस संस्कृति, मूल्य और सामाजिक नियमों को बनाए रखती है, जिन्हें उच्च वर्ग नियंत्रित करता है और जो अन्य वर्गों के लिए आसानी से उपलब्ध नहीं होते।

www.dascoaching.in

14. Write two objectives of formative evaluation of curriculum. পাঠ্যক্রমের গঠনমূলক মূল্যায়নের দুটি উদ্দেশ্য লিখুন। पाठ्यक्रम के रचनात्मक मूल्यांकन के दो उद्देश्य लिखिए। **2019, 2020, 2022**

Ans: <u>पाठ्यक्रम में संरचनात्मक मूल्यांकन के दो उद्देश्य:</u>

1. **छात्रों की सीखने की प्रगति का निर्धारण:** संरचनात्मक मूल्यांकन का एक मुख्य उद्देश्य छात्रों की सीखने की प्रगति और कौशल के बारे में जानकारी एकत्र करना है। यह शिक्षकों को छात्रों की ताकत और कमजोरियों की पहचान करने में मदद करता है, ताकि वे अपनी शिक्षण विधियों में बदलाव या सुधार कर सकें।

2. **शिक्षण पद्धति का सुधार:** संरचनात्मक मूल्यांकन शिक्षकों के लिए एक उपकरण के रूप में कार्य करता है, जिसके माध्यम से वे अपनी शिक्षण रणनीतियों और पाठ्यक्रम की प्रभावकारिता का मूल्यांकन कर सकते हैं। इसके माध्यम से शिक्षक बेहतर पद्धतियाँ अपनाकर शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया को और प्रभावी बना सकते हैं।

15. What is meritocracy? মেধাতন্ত্র কী? मेधातंत्र क्या है? **2023, 2025**

Ans: मेरिटोक्रेसी (Meritocracy) एक सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था है, जिसमें समाज के सदस्यों को उनके प्रतिभा, बुद्धिमत्ता और कौशल के आधार पर अवसर और पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। अर्थात्, व्यक्ति की स्थिति उसके कौशल और योग्यता के आधार पर तय होती है।

<u>मेरिटोक्रेसी की विशेषताएँ:</u>

1. **प्रतिभा के आधार पर मूल्यांकन:** मेरिटोक्रेसी का मुख्य पहलू है व्यक्ति का मूल्यांकन उसकी बुद्धिमत्ता, कौशल और प्रतिभा के आधार पर करना। इसमें सामाजिक या आर्थिक स्थिति कोई भूमिका नहीं निभाती।

2. **अवसर और लाभ:** प्रतिभा के आधार पर चयनित व्यक्ति अपने कौशल के अनुसार अवसर और लाभ पाते हैं, जो उनके करियर में प्रगति और सफलता में सहायक होते हैं।

www.dascoaching.in

3. **शिक्षा का महत्व:** मेरिटोक्रेसी शिक्षा को अत्यधिक महत्व देती है, क्योंकि उच्च शिक्षा और प्रशिक्षण प्राप्त करना व्यक्ति के लिए प्रगति और विकास का मुख्य मार्ग है।

4. **समाज का विकास:** मेरिटोक्रेसी समाज में प्रगति और विकास की प्रक्रिया के रूप में कार्य करती है, जहाँ प्रतिभाशाली व्यक्तियों को सही मूल्यांकन मिलता है और उनके कौशल के आधार पर समाज का विकास होता है।

मेरिटोक्रेसी की आलोचना: मेरिटोक्रेसी की कुछ आलोचनाएँ हैं, जैसे कि यह कभी-कभी सामाजिक असमानता पैदा कर सकती है और यदि किसी व्यक्ति की प्रतिभा या योग्यता को उचित रूप से मान्यता नहीं दी जाती है, तो असमान अवसर उत्पन्न हो सकते हैं। फिर भी, इसे सामान्यतः क्षमता और योग्यता के आधार पर विकास की एक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है।

16. What is social stratification? সামাজিক স্তর বিন্যাস কী? सामाजिक वर्गीकरण क्या है? **2023, 2025**

Ans: सामाजिक स्तर विभाजन (Social Stratification) एक सामाजिक व्यवस्था है, जिसमें समाज के सदस्यों को विभिन्न स्तरों या वर्गों में विभाजित किया जाता है। यह विभाजन आमतौर पर आर्थिक-समाजिक स्थिति, शक्ति, शिक्षा, संपत्ति और सामाजिक प्रतिष्ठा पर आधारित होता है।

<u>सामाजिक स्तर विभाजन के लक्षण:</u>

1. **विभिन्न स्तर:** समाज के सदस्य विभिन्न स्तरों में विभाजित होते हैं, जैसे उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग, और निम्न वर्ग। ये स्तर उनके आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति पर निर्भर करते हैं।

2. **अपरिवर्तनीयता:** सामाजिक स्तर विभाजन के परिणामस्वरूप व्यक्ति के लिए अपने स्तर को बदलना अक्सर कठिन होता है। अर्थात्, जिस वर्ग में कोई जन्म लेता है, उस वर्ग से बाहर आना या उच्च वर्ग में बढ़ना आसान नहीं होता।

3. **शक्ति और अवसर:** विभिन्न स्तरों के सदस्यों में शक्ति, अवसर और संसाधनों का अंतर होता है। उच्च वर्ग के सदस्य आमतौर पर अधिक अवसर और संसाधन प्राप्त करते हैं, जो उनकी सामाजिक स्थिति को और मजबूत बनाता है।

4. **नियम और व्यवहार:** समाज के विभिन्न स्तरों में अलग-अलग नियम, व्यवहार और सामाजिक मूल्य देखे जाते हैं। उदाहरण के लिए, उच्च वर्ग के सदस्यों के लिए विभिन्न सामाजिक कार्यक्रम और व्यवहार हो सकते हैं, जो निम्न वर्ग के सदस्यों के लिए सामान्य नहीं होते।

5. **जीवनशैली और अवसर:** सामाजिक स्तर विभाजन व्यक्ति या समूह की जीवनशैली, स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार के अवसरों को प्रभावित करता है। उच्च स्तर के सदस्य आमतौर पर बेहतर जीवनशैली और सुविधाओं का आनंद लेते हैं।

सामाजिक स्तर विभाजन समाज की संरचना और कार्यप्रणाली को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जो सामाजिक संबंधों, शक्ति और सामाजिक न्याय का विश्लेषण करने में मदद करता है।

17. What do you understand by Value Crisis? মূল্যবোধের সংকট বলতে কী বোঝেন? आप मूल्य संकट से क्या समझते हैं? **2023, 2025**

Ans: मूल्य-संकट (Value Crisis) का अर्थ है वह स्थिति जिसमें समाज या व्यक्तिगत जीवन में मौलिक मूल्य, नैतिकता और नैतिक निर्णय लेने में असंगति या भ्रम उत्पन्न हो। यह आमतौर पर तब होता है जब समाज में प्रचलित मूल्य बदलते हैं, या जब नए मानदंड और चुनौतियाँ आती हैं, जिससे पुराने मूल्यों पर संदेह या बहस उत्पन्न होती है।

<u>मूल्य-संकट के लक्षण:</u>

1. **विविधता और भ्रम:** समाज में विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों और आदर्शों के बीच संघर्ष या अंतर मूल्य संबंधी भ्रम और द्वंद्व पैदा करता है।

2. **नैतिक अस्थिरता:** जब व्यक्तियों या समूहों में नैतिक और नैतिक मूल्यों में अस्थिरता आती है, तो मूल्य-संकट उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिए, जब समाज में ईमानदारी, नैतिकता और सत्य की अनदेखी होती है।

3. **मानव संबंधों का पतन:** मूल्य-संकट के कारण मानव संबंधों की गुणवत्ता, सहानुभूति और सहयोग की कमी हो सकती है, जो सामाजिक अस्थिरता और संघर्ष की ओर ले जाती है।

4. **आर्थिक और सामाजिक दबाव:** गरीबी, बेरोज़गारी और असमानता जैसी सामाजिक और आर्थिक चुनौतियाँ मूल्य-संकट के महत्वपूर्ण कारण हो सकती हैं। जब लोगों की बुनियादी आवश्यकताएँ पूरी नहीं होतीं, तो वे अपने मूल्यों और नैतिकता पर सवाल उठाने लगते हैं।

5. **परिवर्तनशील समाज:** आधुनिक समाज में प्रौद्योगिकी, वैश्वीकरण और सांस्कृतिक परिवर्तन मूल्य-संकट उत्पन्न करते हैं। नई तकनीकों और सोशल मीडिया का उपयोग लोगों के मूल्यों पर प्रभाव डाल सकता है।

मूल्य-संकट एक गंभीर समस्या है, जो समाज की प्रगति और एकता में बाधा डाल सकती है। इसे जागरूकता, चर्चा और नए मूल्य निर्माण के माध्यम से हल करने की आवश्यकता है, ताकि एक सकारात्मक और नैतिक समाज स्थापित किया जा सके।

18. What do you understand by 'Curriculum Transaction'? পাঠক্রমের সঞ্চালন বলতে কী বোঝেন? आप पाठ्यक्रम स्थानांतरण से क्या समझते हैं? **2024**

Ans: <u>प्रस्तावना:</u> शिक्षाशास्त्र के संदर्भ में पाठ्यक्रम (Curriculum) केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं है, बल्कि एक गतिशील प्रक्रिया है। 'पाठ्यक्रम संव्यवहार' (Curriculum Transaction) वह माध्यम है जिसके द्वारा विद्यालय के पूर्व-निर्धारित पाठ्यक्रम को कक्षा में शिक्षक और छात्र की पारस्परिक अंतःक्रिया के माध्यम से प्रभावी बनाया जाता है। सरल शब्दों में, पाठ्यपुस्तक के लिखित रूप को शिक्षण-अधिगम अनुभवों में बदलने की प्रक्रिया ही पाठ्यक्रम संव्यवहार है।

<u>मुख्य चर्चा:</u> पाठ्यक्रम संव्यवहार का अर्थ है पाठ्यक्रम की योजना को वास्तविकता में बदलना। यह केवल पाठ्यपुस्तक पढ़ने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें निम्नलिखित शामिल हैं—

1. **प्रस्तुतीकरण पद्धति:** शिक्षक किस प्रकार विषयवस्तु को छात्रों के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं।
2. **शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM):** शिक्षण को आनंदमय और अर्थपूर्ण बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली सामग्री (TLM) या तकनीक।
3. **पारस्परिक अंतःक्रिया:** कक्षा में प्रश्नोत्तरी के माध्यम से शिक्षक और छात्र के बीच ज्ञान का आदान-प्रदान।
4. **मूल्यांकन:** यह जांचने की पद्धति कि शिक्षण कितना सफल रहा।

मूल रूप से, शिक्षक की दक्षता, छात्रों की सक्रिय भागीदारी और उचित वातावरण के मेल से ही पाठ्यक्रम संव्यवहार होता है। यह एक त्रि-स्तरीय प्रक्रिया है—योजना (Planning), क्रियान्वयन (Implementation), और मूल्यांकन (Evaluation)।

निष्कर्ष: अंत में यह कहा जा सकता है कि पाठ्यक्रम संव्यवहार शिक्षण प्रक्रिया का हृदय है। सही पाठ्यक्रम संव्यवहार के माध्यम से ही पाठ्यक्रम के लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त किया जाता है और छात्र का सर्वांगीण विकास व ज्ञानार्जन त्वरित होता है। इसलिए, पाठ्यक्रम की उत्कृष्टता जितनी महत्वपूर्ण है, उसकी संव्यवहार की पद्धति (Methodology) भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

19. Give two characteristics of Micro Evaluation in Curriculum. পাঠক্রমে অণুমূল্যায়ণের দুটি বৈশিষ্ট্য লিখুন। पाठ्यक्रम में सूक्ष्म मूल्यांकन की दो विशेषताएँ लिखिए। **2024**

Ans: पाठ्यक्रम में सूक्ष्म मूल्यांकन (Micro Evaluation) की विशेषताएँ: सूक्ष्म मूल्यांकन मुख्य रूप से पाठ्यक्रम के बहुत छोटे और विशिष्ट हिस्से पर केंद्रित होता है। इसका उद्देश्य छोटे-छोटे शिक्षण खंडों की प्रभावशीलता का आकलन करना और आवश्यक संशोधन करना है। यह शिक्षकों को उनके शिक्षण अनुभव को और अधिक प्रभावी बनाने में मदद करता है। नीचे इसके दो मुख्य विशेषताएँ दी गई हैं—

1. **सीमित परिमाण में किया जाता है:** सूक्ष्म मूल्यांकन आमतौर पर किसी पाठ के विशिष्ट हिस्से, एक पाठ योजना या विशेष शिक्षण तकनीक पर केंद्रित होता है। इसलिए इसे बहुत छोटे पैमाने पर और कम समय में पूरा किया जा सकता है।

2. **शिक्षण प्रक्रिया पर तात्कालिक प्रतिक्रिया प्रदान करता है:** इस प्रकार का मूल्यांकन शिक्षक को जल्दी समझने में मदद करता है कि कौन सी तकनीक प्रभावी रही और कौन सी नहीं। परिणामस्वरूप, शिक्षण-शिक्षण प्रक्रिया में आवश्यक परिवर्तन किए जा सकते हैं।

अतः कहा जा सकता है कि सूक्ष्म मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जो पाठ्यक्रम की गुणवत्ता का छोटे स्तर पर मूल्यांकन करती है और बेहतर शिक्षण सुनिश्चित करती है।

www.dascoaching.in

20. Write two demerits of Summative Evaluation. সমষ্টিগত মূল্যায়নের দুটি অসুবিধা লিখুন। सारांशात्मक मूल्यांकन की दो कमियाँ लिखिए। **2024**

Ans: **<u>समष्टिगत मूल्यांकन के दो नुकसान:</u>** समष्टिगत मूल्यांकन आमतौर पर किसी निश्चित अवधि के बाद छात्र की शैक्षणिक उपलब्धियों का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाता है। लेकिन इसके कुछ सीमाएँ हैं।

पहली बात, यह केवल छात्र के अंतिम परिणाम पर ध्यान केंद्रित करता है, न कि सीखने की प्रक्रिया पर। परिणामस्वरूप, यदि कोई छात्र किसी कारणवश परीक्षा के दिन अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाता है, तो उसका वास्तविक ज्ञान और कौशल सही ढंग से प्रदर्शित नहीं होता। यह शिक्षा की गुणात्मक गुणवत्ता निर्धारित करने में एक बड़ी सीमा है।

दूसरी बात, समष्टिगत मूल्यांकन रटंत अधिगम (rote learning) की प्रवृत्ति को बढ़ाता है। छात्र मुख्य रूप से परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए पढ़ाई करते हैं, लेकिन ज्ञान को वास्तविक जीवन में लागू करने की मानसिकता विकसित नहीं होती। इसके परिणामस्वरूप, रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच का विकास बाधित होता है।

कुल मिलाकर, समष्टिगत मूल्यांकन छात्र की सीखने की संपूर्ण छवि प्रस्तुत करने में विफल रहता है और शिक्षण प्रक्रिया को तनावमुक्त और आनंदपूर्ण बनाने के बजाय अक्सर इसे प्रतिस्पर्धात्मक और नीरस बना देता है।

21. Write two objectives of the micro-evaluation in curriculum. পাঠ্যক্রমের মাইক্রো-ইভালুয়েশন বা অনু-মূল্যায়নের দুটি উদ্দেশ্য লেখো। पाठ्यक्रम में सूक्ष्म-मूल्यांकन (micro-evaluation) के दो उद्देश्य लिखिए। **2025**

Ans: **<u>प्रस्तावना:</u>** शिक्षाशास्त्र के क्षेत्र में पाठ्यक्रम मूल्यांकन एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। पाठ्यक्रम के समग्र मूल्यांकन के साथ-साथ, पाठ्यक्रम की किसी विशिष्ट इकाई, विषयवस्तु या शिक्षण पद्धति की प्रभावशीलता को जाँचने के लिए जिस सूक्ष्म और विस्तृत मूल्यांकन की आवश्यकता होती है, उसे 'माइक्रो-इवैल्यूएशन' (अनु-मूल्यांकन) कहा जाता है। बी.एड. पाठ्यक्रम के 'नॉलेज एंड करिकुलम' (ज्ञान और पाठ्यक्रम) विषय के संदर्भ में यह मूल्यांकन अत्यंत महत्वपूर्ण है।

माइक्रो-इवैल्यूएशन के दो मुख्य उद्देश्य:

1. **विशिष्ट त्रुटियों की पहचान:** किसी विशिष्ट इकाई (unit) या उप-इकाई (sub-unit) को पढ़ाते समय विद्यार्थी किन बिंदुओं पर कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं, इसकी पहचान करना माइक्रो-इवैल्यूएशन का एक प्रमुख उद्देश्य है। यह शिक्षकों को यह समझने में मदद करता है कि पाठ्यक्रम में कहाँ संशोधन या सुधार की आवश्यकता है।
2. **शिक्षण विधियों की उपयोगिता की जाँच:** शिक्षण या अधिगम प्रक्रिया में प्रयुक्त रणनीतियों या विधियों की जाँच करना कि वे छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करने में कितनी सफल हैं। यदि कोई विशिष्ट शिक्षण पद्धति छात्रों की उपलब्धि में बाधा उत्पन्न करती है, तो इस मूल्यांकन के माध्यम से उसे तुरंत परिवर्तित या उन्नत किया जा सकता है।

निष्कर्ष: अंत में यह कहा जा सकता है कि पाठ्यक्रम के व्यापक ढांचे को प्रभावी बनाने के लिए माइक्रो-इवैल्यूएशन एक अनिवार्य उपकरण है। यह पाठ्यक्रम की गुणवत्ता सुनिश्चित करने और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक वैज्ञानिक और छात्र-केंद्रित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

22. Mention the relationship between society and power. সমাজ ও ক্ষমতার মধ্যকার সম্পর্ক উল্লেখ করো। समाज और सत्ता (power) के बीच संबंध का उल्लेख कीजिए। **2025**

Ans: प्रस्तावना: समाज और सत्ता एक-दूसरे के पूरक हैं और आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं। समाज मानवीय अंतःक्रिया का क्षेत्र है, जबकि सत्ता उस समाज को नियंत्रित, संचालित और संरचनात्मक रूप देने वाली मुख्य प्रेरक शक्ति है।

समाज और सत्ता का संबंध: समाज और सत्ता के बीच का संबंध अत्यंत गहरा और बहुआयामी है। इनका संबंध नीचे वर्णित है-

1. **सामाजिक संरचना का निर्धारण:** समाज अपने अस्तित्व के लिए कुछ नियम-कानून बनाता है। सत्ता इन नियमों को लागू करके सामाजिक अनुशासन बनाए रखती है। अर्थात, सत्ता सामाजिक ढांचे की स्थिरता सुनिश्चित करती है।

2. **निर्णय लेना:** समाज में किसी भी बदलाव या नई नीति को लागू करने में सत्ता का प्रयोग अनिवार्य है। राजनीतिक, आर्थिक या सामाजिक क्षेत्रों में जो निर्णय लिए जाते हैं, वे सत्ता के संतुलन द्वारा ही नियंत्रित होते हैं।
3. **संसाधनों और अवसरों का वितरण:** समाज में संसाधनों, सम्मान और अवसरों का वितरण सत्ता पर निर्भर करता है। जिसके हाथ में सत्ता होती है, वह इन सुविधाओं को अपने या किसी विशिष्ट समूह के पक्ष में प्रभावित कर सकता है।
4. **सामाजिक नियंत्रण:** समाज विरोधी या अराजक गतिविधियों को रोककर शांति बनाए रखने के लिए राज्य या अधिकारी सत्ता का उपयोग करते हैं। यह समाज की सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित करता है।
5. **द्वंद्व और परिवर्तन:** जब सत्ता का प्रयोग असमान होता है, तो समाज में असमानता पैदा होती है, जिससे क्रांति या सामाजिक परिवर्तन की शुरुआत होती है। यानी, सत्ता जैसे समाज को स्थिर रखती है, वैसे ही सत्ता का असंतुलन समाज में परिवर्तन का उत्प्रेरक (catalyst) भी बनता है।

निष्कर्ष: अंत में यह कहा जा सकता है कि सत्ता के बिना समाज का संचालन असंभव है और समाज के बिना सत्ता का कोई अस्तित्व नहीं है। एक स्वस्थ और प्रगतिशील समाज के लिए सत्ता का सही और न्यायसंगत प्रयोग अत्यंत आवश्यक है।

23. Write down two merits of formative evaluation. গঠনমূলক মূল্যায়নের দুটি সুবিধা লেখো। निर्माणात्मक मूल्यांकन (formative evaluation) के दो गुण लिखिए। **2025**

Ans: प्रस्तावना: शिक्षण और अधिगम (सीखने) की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग मूल्यांकन है। 'रचनात्मक मूल्यांकन' (Formative Evaluation) एक ऐसी प्रक्रिया है जो शिक्षण के दौरान नियमित रूप से की जाती है। यह सीखने की कमजोरियों की पहचान करने और तत्काल सुधारात्मक उपाय करने का अवसर प्रदान करती है। नीचे रचनात्मक मूल्यांकन के दो मुख्य लाभों पर चर्चा की गई है।

मुख्य चर्चा:

1. **शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सुधार:** रचनात्मक मूल्यांकन का एक मुख्य लाभ यह है कि यह शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को उनकी प्रगति का स्पष्ट चित्र प्रदान करता है। पाठ के दौरान छोटे क्विज़, प्रश्नोत्तर या चर्चाओं के माध्यम से शिक्षक यह समझ सकते हैं कि छात्रों ने विषय को कितना समझा है। यदि

छात्रों को समझने में कोई कमी रह जाती है, तो शिक्षक तुरंत अपनी शिक्षण पद्धति में बदलाव या परिमार्जन कर सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप एक त्रुटि-मुक्त और प्रभावी शिक्षण वातावरण तैयार होता है।

2. **शिक्षार्थियों की कमजोरियों की पहचान और उपचार:** इस मूल्यांकन प्रक्रिया के माध्यम से स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षार्थियों के सीखने के क्षेत्रों में कहाँ कमियाँ या गलत धारणाएँ हैं। शिक्षक उन विशिष्ट कमजोरियों की पहचान करके तत्काल 'फीडबैक' या प्रतिक्रिया प्रदान कर सकते हैं। यह छात्रों के आत्मविश्वास को बढ़ाता है और उनके सीखने के मार्ग की बाधाओं को दूर करने में मदद करता है, जिससे वे भविष्य के बड़े मूल्यांकनों के लिए तैयार हो जाते हैं।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, रचनात्मक मूल्यांकन केवल अंक देने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सीखने की गुणवत्ता में सुधार करने की एक शक्तिशाली तकनीक है। यह निरंतर छात्रों के विकास में सहायता करता है और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक गतिशील, वैज्ञानिक और छात्र-केंद्रित बनाता है। अतः प्रभावी शिक्षण के लिए रचनात्मक मूल्यांकन अनिवार्य है।

24. Write the full name of 'NCF' and 'NCFTE'. 'NCF' এবং 'NCFTE'-এর সম্পূর্ণ নাম লেখো।'NCF' और 'NCFTE' का पूरा नाम लिखिए। **2025**

Ans: प्रस्तावना: भारत की शिक्षा प्रणाली को आधुनिक, वैज्ञानिक और बाल-केंद्रित बनाने के उद्देश्य से, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) और राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) ने समय-समय पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार की है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन में मुख्य भूमिका निभाती है।

Full name of 'NCF' and 'NCFTE':

- **NCF:** इसका पूर्ण रूप **'National Curriculum Framework'** (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा) है। यह एक नीति-निर्धारक दस्तावेज है जो स्कूली शिक्षा की विषय-वस्तु, शिक्षण विधियों और मूल्यांकन प्रक्रियाओं को निर्धारित करता है। इसे मुख्य रूप से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और छात्रों के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

- **NCFTE:** इसका पूर्ण रूप **'National Curriculum Framework for Teacher Education'** (अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा) है। यह मुख्य रूप से यह दिशा-निर्देश प्रदान करता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों या संस्थानों में शिक्षकों को तैयार करने के लिए किस प्रकार की पाठ्यचर्या का पालन किया जाना चाहिए। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल का विकास करना और उन्हें कक्षा में प्रभावी बनाना है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुणात्मक परिवर्तन के लिए NCF और NCFTE दोनों ही अपरिहार्य हैं। जहाँ NCF छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का वातावरण सुनिश्चित करता है, वहीं NCFTE कुशल और योग्य शिक्षकों का निर्माण करके उस शिक्षा की गुणवत्ता को बनाए रखने में मदद करता है। इन दो दस्तावेजों का सही समन्वय शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में प्रभावी भूमिका निभाता है।

5 Marks

1. Discuss the importance of Indian Constitutional values in curriculum. পাঠক্রমে ভারতীয় সংবিধান-স্বীকৃত মূল্যবোধগুলির গুরুত্ব আলোচনা করুন। पाठ्यक्रम में भारतीय संवैधानिक मूल्यों के महत्व पर चर्चा करें। **2018, 2020, 2021, 2023**

Ans: पाठ्यक्रम में संविधान-स्वीकृत मूल्यों का महत्व:

1. **नैतिक शिक्षा:** भारतीय संविधान नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी और मानव मूल्यों पर जोर देता है। पाठ्यक्रम में इन मूल्यों को शामिल करने से छात्रों को सही व्यवहार और जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित करने में मदद मिलती है।
2. **सामाजिक एकता:** भारत एक विविध समाज है, जहाँ विभिन्न धर्म, जाति और संस्कृतियाँ हैं। संविधान-स्वीकृत मूल्यों जैसे धर्मनिरपेक्षता, समानता और भ्रातृत्व को पाठ्यक्रम में शामिल करने से छात्रों में सामाजिक एकता और सहिष्णुता बढ़ती है।
3. **नागरिक जागरूकता:** छात्रों को संविधान में निहित मौलिक अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में शिक्षित करने से वे अपने नागरिकत्व के प्रति जागरूक होते हैं। यह उन्हें अपने अधिकारों और समाज के प्रति जिम्मेदार बनने में मदद करता है।

4. **कानून और अनुशासनः** भारतीय संविधान कानून का सम्मान और अनुशासन बनाए रखने के महत्व को उजागर करता है। पाठ्यक्रम में इस शिक्षा को शामिल करने से छात्रों में कानून का पालन करने की आदत विकसित होती है।

5. **समानता और न्यायः** यदि पाठ्यक्रम में सामाजिक और आर्थिक समानता जैसे संविधान-स्वीकृत मूल्य शामिल किए जाएँ, तो छात्र समाज में न्याय और समानता के महत्व को समझते हैं, जो समाज के विकास में सहायक होता है।

6. **नैतिक नेतृत्वः** संविधान-स्वीकृत मूल्य छात्रों में नेतृत्व गुण विकसित करने में मदद करते हैं। जब छात्र नैतिक और मानवीय मूल्य अपनाते हैं, तो वे भविष्य में समाज के लिए अच्छे नेता बनते हैं।

7. **सामाजिक जिम्मेदारीः** पाठ्यक्रम में संविधान-स्वीकृत मूल्य शामिल करने से छात्रों में सामाजिक जिम्मेदारी का भाव पैदा होता है। वे समाज के विकास और देश निर्माण में सकारात्मक योगदान देने के लिए तैयार होते हैं।

पाठ्यक्रम में संविधान-स्वीकृत मूल्य शामिल करने से छात्र न केवल अच्छे नागरिक बनते हैं, बल्कि वे नैतिक, मानवीय और सामाजिक जिम्मेदारी में पूर्ण नेतृत्व की भूमिका निभाने में सक्षम होते हैं। यह देश की भविष्य की पीढ़ी के विकास और समाज की प्रगति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

2. Write the characteristics and utility of Hidden Curriculum. লুক্কায়িত পাঠক্রমের বৈশিষ্ট্য ও উপযোগিতা লিখুন। गोपनीय पाठ्यक्रम की विशेषताओं और उपयोगिता को लिखिए। **2018, 2021**

Ans: छिपा पाठ्यक्रम उस शैक्षिक प्रक्रिया या अवधारणाओं को कहा जाता है, जिसे विद्यार्थी औपचारिक पाठ्यक्रम के बाहर सीखते हैं। यह आमतौर पर स्कूल के वातावरण, शिक्षकों के व्यवहार, सहपाठियों के साथ संबंध और विद्यालय की संस्कृति के माध्यम से विकसित होता है। हालांकि छिपा पाठ्यक्रम औपचारिक विषयों से अलग होता है, यह छात्रों के चरित्र, मूल्य और सामाजिक कौशल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

<u>छिपे पाठ्यक्रम की विशेषताएँ:</u>

1. **अस्वीकृत शिक्षा:** छिपे पाठ्यक्रम की सामग्री औपचारिक रूप से पाठ्यक्रम में शामिल नहीं होती, फिर भी यह छात्रों में मौलिक मूल्य, नैतिकता और सामाजिक व्यवहार के विकास में सहायक होती है।

2. **प्राकृतिक शिक्षा:** यह आमतौर पर छात्रों के दैनिक जीवन में घटित होती है, जैसे स्कूल का वातावरण, सहपाठियों के साथ संवाद और शिक्षकों का व्यवहार।

3. **प्रभावशाली:** छिपा पाठ्यक्रम छात्रों के दृष्टिकोण, विश्वास और सामाजिक कौशल पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है।

4. **विविधता:** छिपा पाठ्यक्रम विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए अलग-अलग रूप से कार्य करता है।

<u>छिपे पाठ्यक्रम का उपयोगिता:</u>

1. **मानवीय और सामाजिक मूल्यों का विकास:** यह छात्रों में सहानुभूति, सहिष्णुता और जिम्मेदारी जैसे मानवीय और सामाजिक मूल्य विकसित करता है।

2. **सामाजिक कौशल का विकास:** यह छात्रों के सामाजिक कौशल जैसे संचार, सहयोग और समस्या समाधान की क्षमता को सुधारता है।

3. **नेतृत्व गुण:** छिपा पाठ्यक्रम छात्रों में नेतृत्व के गुण विकसित करने में सहायक होता है, क्योंकि वे विभिन्न परिस्थितियों में निर्णय लेने और समस्याओं का समाधान करने का अनुभव प्राप्त करते हैं।

4. **आचार-व्यवहार का अधिगम:** छात्र विद्यालय और समाज में विभिन्न व्यवहार सीखते हैं और अपने व्यवहारिक कौशल को सुधारते हैं, जो भविष्य में उन्हें सफल होने में मदद करता है।

5. **व्यक्तिगत पहचान का निर्माण:** यह छात्रों को अपनी व्यक्तिगत पहचान और मूल्य बनाने में मदद करता है, जो उनके भविष्य के नैतिक और सामाजिक चरित्र को प्रभावित करता है।

www.dascoaching.in

छिपा पाठ्यक्रम एक महत्वपूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया है, जो औपचारिक शिक्षा के बाहर छात्रों को सीखने में मदद करता है और उनके मानवीय, सामाजिक और नैतिक गुणों के विकास में योगदान देता है। यह शिक्षा का एक अनिवार्य पहलू है, जो छात्रों के समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

3. Write the guiding principles of curriculum framing for various social groups. বিভিন্ন সামাজিক গোষ্ঠীর ক্ষেত্রে পাঠক্রম প্রণয়নের নির্দেশনামূলক নীতিসমূহ লিখুন। विभिन्न सामाजिक समूहों के लिए पाठ्यक्रम निर्माण के दिशानिर्देशक सिद्धांत लिखिए। **2018, 2020, 2022, 2024**

Ans: <u>विभिन्न सामाजिक समूहों के लिए पाठ्यक्रम निर्माण के निर्देशात्मक सिद्धांत:</u>

1. **समानता और न्याय:** पाठ्यक्रम इस तरह से तैयार किया जाना चाहिए कि सभी छात्रों के लिए समान अवसर और अधिकार सुनिश्चित हों, विशेष रूप से महिलाओं, जातीय अल्पसंख्यकों और निम्न-आय वाले परिवारों के छात्रों के लिए।
2. **स्थानीय संदर्भ:** पाठ्यक्रम को विभिन्न सामाजिक समूहों के सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ को ध्यान में रखकर तैयार किया जाना चाहिए। इसमें स्थानीय भाषा, परंपराएँ और सांस्कृतिक विविधता शामिल होनी चाहिए।
3. **सामाजिक और आर्थिक असमानता को कम करना:** पाठ्यक्रम में ऐसे रणनीति और विषयवस्तु शामिल होनी चाहिए जो छात्रों के बीच सामाजिक और आर्थिक असमानता को कम करें, ताकि सभी छात्र सामाजिक रूप से समृद्ध हो सकें।
4. **अंतर-सांस्कृतिक समझ:** पाठ्यक्रम में अंतर-सांस्कृतिक शिक्षा को शामिल किया जाना चाहिए, ताकि विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के छात्रों के बीच समझ और सहिष्णुता बढ़े।
5. **प्रतिक्रिया और भागीदारी:** पाठ्यक्रम निर्माण प्रक्रिया में विभिन्न सामाजिक समूहों की राय और सुझाव लिए जाने चाहिए, ताकि वे शिक्षा में भाग ले सकें और उनके आवश्यकताओं के अनुसार पाठ्यक्रम तैयार किया जा सके।

www.dascoaching.in

6. **प्रौद्योगिकी का उपयोग:** विभिन्न सामाजिक समूहों के छात्रों के लिए शिक्षा पद्धति को उन्नत करने के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकी और डिजिटल शिक्षा का उपयोग किया जाना चाहिए, ताकि छात्र नया ज्ञान प्राप्त कर सकें।

7. **मूल्य और नैतिक शिक्षा:** पाठ्यक्रम में मानव मूल्य और नैतिक शिक्षा शामिल होनी चाहिए, जो छात्रों में सहानुभूति, जिम्मेदारी और सामाजिक न्याय का विकास करे।

8. **स्व-निर्णय और आत्मविश्वास:** पाठ्यक्रम को इस तरह डिज़ाइन किया जाना चाहिए कि छात्रों में स्व-निर्णय और आत्मविश्वास बढ़े, जिससे वे अपनी संस्कृति और पहचान का सम्मान करें और उसे सही ढंग से व्यक्त कर सकें।

9. **पहचान और अध्ययन:** पाठ्यक्रम में विभिन्न सामाजिक समूहों के सदस्यों के अनुभवों को स्वीकार किया जाना चाहिए और उनकी शिक्षा का समर्थन किया जाना चाहिए, ताकि वे अपने विचार और दृष्टिकोण व्यक्त कर सकें और समृद्ध हो सकें।

ये पाठ्यक्रम निर्माण के निर्देशात्मक सिद्धांत विभिन्न सामाजिक समूहों की आवश्यकताओं और विविधता का सम्मान करते हैं, और सुनिश्चित करते हैं कि शिक्षा प्रक्रिया सभी छात्रों के लिए खुली, प्रभावी और अर्थपूर्ण हो।

4. Discuss the principles of selecting curriculum content. পাঠক্রমের বিষয়বস্তু নির্বাচনের নীতিগুলি আলোচনা করুন। पाठ्यक्रम सामग्री चयन के सिद्धांतों पर चर्चा करें। **2018, 2021**

Ans: <u>प्रस्तावना:</u> शिक्षा प्रक्रिया का केंद्रबिंदु पाठ्यचर्या (Curriculum) है। एक आदर्श पाठ्यचर्या शिक्षार्थी के समग्र विकास में सहायता करती है। पाठ्यचर्या की विषय-वस्तु का चयन एक अत्यंत महत्वपूर्ण और उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य है। पाठ्यचर्या तैयार करते समय विषय-वस्तु के चयन में कुछ विशिष्ट सिद्धांतों का पालन करना वांछनीय है, ताकि शिक्षा के लक्ष्यों और उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त किया जा सके। विषय-वस्तु चयन के मुख्य सिद्धांत नीचे दिए गए हैं।

<u>विषय-वस्तु चयन के सिद्धांत:</u>

1. **उपयोगिता का सिद्धांत (Principle of Utility):** विषय-वस्तु का चयन करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वह शिक्षार्थी के वास्तविक जीवन में काम आए। विषय केवल सैद्धांतिक न होकर व्यावहारिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने में सक्षम होना चाहिए।
2. **शिक्षार्थी की क्षमता और आयु का सिद्धांत (Principle of Learner's Ability and Age):** पाठ्यचर्या की विषय-वस्तु शिक्षार्थी की आयु, मानसिक परिपक्वता, रुचि और योग्यता के अनुरूप होनी चाहिए। जटिल विषय-वस्तु को निचली कक्षाओं में शामिल नहीं किया जाना चाहिए।
3. **सामाजिक और सांस्कृतिक प्रासंगिकता का सिद्धांत (Principle of Social and Cultural Relevance):** शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। इसलिए, समाज और संस्कृति के मूल्यों, आवश्यकताओं और परंपराओं का प्रतिबिंब विषय-वस्तु में होना चाहिए। यह छात्रों में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने में मदद करता है।
4. **लचीलेपन का सिद्धांत (Principle of Flexibility):** पाठ्यक्रम में समय और परिस्थितियों के साथ बदलने की क्षमता होनी चाहिए। सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार विषय-वस्तु में संशोधन या सुधार की गुंजाइश होनी चाहिए।
5. **सृजनात्मकता और अनुभव का सिद्धांत (Principle of Creativity and Experience):** विषय-वस्तु ऐसी होनी चाहिए जो छात्रों की रचनात्मक सोच का विकास करे और उनके पूर्व अनुभवों को नई शिक्षा के साथ जोड़ने में मदद करे।
6. **तर्क और निरंतरता का सिद्धांत (Principle of Logic and Continuity):** विषय-वस्तु को व्यवस्थित करते समय 'सरल से कठिन' और 'साधारण से जटिल' के क्रम को बनाए रखना अनिवार्य है, ताकि छात्र विषय-वस्तु को आसानी से समझ सकें।
7. **व्यापकता का सिद्धांत (Principle of Comprehensiveness):** पाठ्यचर्या की विषय-वस्तु ऐसी होनी चाहिए जिससे शिक्षार्थी के बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक और नैतिक—अर्थात् सर्वांगीण विकास का अवसर मिले।

निष्कर्ष: अंत में यह कहा जा सकता है कि शिक्षा की सफलता काफी हद तक पाठ्यचर्या की विषय-वस्तु के चयन पर निर्भर करती है। उचित सिद्धांतों का पालन करके विषय-वस्तु का चयन करने से न केवल शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया आनंददायक बनती है, बल्कि यह शिक्षार्थी के व्यक्तित्व के संतुलित विकास में भी सहायक भूमिका निभाती है। शिक्षकों, शिक्षाविदों और योजनाकारों को इन सिद्धांतों पर अत्यंत सावधानी से विचार करना चाहिए।

www.dascoaching.in

5. Discuss the principles of constructing 'Time Table'. 'সময় তালিকা' রচনার নীতিগুলি আলোচনা করুন। 'समय सारणी' निर्माण के सिद्धांतों पर चर्चा करें। **2018, 2020, 2022, 2024**

Ans: <u>प्रस्तावना:</u> विद्यालय के सुचारू और अनुशासित संचालन के लिए 'समय सारणी' (Time Table) एक अनिवार्य दस्तावेज़ है। यह विद्यालय का दर्पण है, जिसमें दैनिक शिक्षण-अधिगम गतिविधियों की एक सुनियोजित रूपरेखा दिखाई देती है। एक आदर्श समय सारणी न केवल विद्यालय की अव्यवस्था को दूर करती है, बल्कि शिक्षण विषयों को व्यवस्थित और गतिशील बनाती है। समय सारणी बनाने के मुख्य सिद्धांत नीचे दिए गए हैं:

<u>समय सारणी बनाने के प्रमुख सिद्धांत:</u>

1. **उपयोगिता का सिद्धांत (Principle of Utility):** समय सारणी ऐसी होनी चाहिए जो यथार्थवादी और व्यावहारिक हो। इसे विद्यालय के बुनियादी ढांचे, शिक्षकों की संख्या और उपलब्ध समय को ध्यान में रखकर तैयार किया जाना चाहिए ताकि यह दैनिक आवश्यकताओं के लिए प्रभावी हो।
2. **लचीलेपन का सिद्धांत (Principle of Flexibility):** समय सारणी कठोर या अनम्य नहीं होनी चाहिए। विशेष परिस्थितियों या आपातकालीन जरूरतों (जैसे किसी शिक्षक की अनुपस्थिति या विशेष कार्यक्रम) के दौरान समय सारणी में बदलाव या समन्वय करने की गुंजाइश होनी चाहिए।
3. **संतुलन का सिद्धांत (Principle of Balance):** प्रत्येक विषय के महत्व के अनुसार समय आवंटित किया जाना चाहिए। जटिल और कठिन विषयों को दिन की शुरुआत में रखा जाना चाहिए जब छात्रों की मानसिक क्षमता अधिक होती है। इसके विपरीत, हस्तकला, शारीरिक शिक्षा या रचनात्मक विषयों को दिन के बाद के भाग में रखा जा सकता है।
4. **शिक्षक की क्षमता और रुचि का सिद्धांत (Principle of Teacher's Interest):** समय का आवंटन शिक्षक के कौशल और रुचि के आधार पर किया जाना चाहिए। शिक्षक को लगातार लंबे समय तक कक्षा में नहीं पढ़ाना चाहिए और उन्हें आराम देने की व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि वे अगली कक्षा में नई ऊर्जा के साथ पढ़ा सकें।

www.dascoaching.in

5. **कक्षा की उपलब्धता का सिद्धांत (Principle of Classroom Utilization):** समय सारणी की संरचना करते समय उपलब्ध कक्षाओं और प्रयोगशालाओं की संख्या पर विचार करना चाहिए, ताकि किसी भी समय कक्षा की कमी या अनावश्यक भीड़ न हो।
6. **विश्राम और मनोरंजन का सिद्धांत (Principle of Rest and Recreation):** लगातार लंबे समय तक पढ़ाई करने से छात्र थक जाते हैं। इसलिए, पढ़ाई के बीच-बीच में छोटा ब्रेक या टिफिन का समय रखना जरूरी है, जो उनकी शारीरिक और मानसिक ताजगी वापस लाता है।

निष्कर्ष: अंत में यह कहा जा सकता है कि समय सारणी केवल घंटों या समय का हिसाब नहीं है, बल्कि यह विद्यालय के शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की एक रणनीति है। सही सिद्धांतों का पालन करके समय सारणी बनाने से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया गतिशील हो जाती है और शिक्षक व छात्र दोनों की कार्यक्षमता बढ़ती है। इसलिए, विद्यालय का सुचारू वातावरण बनाए रखने के लिए समय सारणी बनाते समय वैज्ञानिक और मानवीय, दोनों दृष्टिकोणों को अपनाना वांछनीय है।

6. Briefly discuss any five characteristics of a curriculum. একটি পাঠ্যক্রমের যে কোনো পাঁচটি বৈশিষ্ট্য সংক্ষেপে আলোচনা করুন। पाठ्यक्रम की कोई भी पाँच विशेषताओं पर संक्षेप में चर्चा करें। **2019**

Ans: पाठ्यक्रम: पाठ्यक्रम एक नियोजित योजना है, जिसमें शैक्षिक संस्थानों में शिक्षा प्रदान करने के लिए विषयवस्तु, विधियाँ और मूल्यांकन रणनीतियाँ शामिल होती हैं। यह छात्रों के सीखने के अनुभव और उनके विकास के लिए एक संरचना प्रदान करता है।

पाठ्यक्रम के गुण:

1. **लक्ष्य-उन्मुख:** पाठ्यक्रम के स्पष्ट उद्देश्य और लक्ष्य होते हैं, जो छात्रों के सीखने के अनुभव की गुणवत्ता बढ़ाते हैं। यह छात्रों को विशिष्ट ज्ञान और कौशल प्राप्त करने में मदद करता है।
2. **समेकित:** पाठ्यक्रम विभिन्न शैक्षिक क्षेत्रों में समन्वय करता है, जिससे छात्र विभिन्न विषयों में समेकित ज्ञान प्राप्त कर सकें। यह विविध सोच और समस्या सुलझाने की क्षमता के विकास में सहायक होता है।

3. **अंतरसंबंधित:** पाठ्यक्रम विषयों के बीच आपसी संबंध पर जोर देता है। यह छात्रों को विषयों के बीच संबंध समझने में मदद करता है और विभिन्न दृष्टिकोणों से सोचने के लिए प्रेरित करता है।

4. **विविधता:** पाठ्यक्रम की विषयवस्तु और विधियों में विविधता होती है, जो विभिन्न छात्रों की जरूरतों और रुचियों का सम्मान करती है। यह छात्रों को विभिन्न शिक्षण शैलियों का अनुभव करने का अवसर प्रदान करता है।

5. **गतिशील/प्रगतिशील:** पाठ्यक्रम समय के साथ बदल सकता है ताकि यह नए शोध, तकनीक और समाज में परिवर्तनों के अनुकूल हो सके। यह सुनिश्चित करता है कि शैक्षिक सामग्री हमेशा प्रासंगिक और अद्यतन बनी रहे।

पाठ्यक्रम शिक्षा का एक मूलभूत घटक है, जो छात्रों के सीखने के अनुभव को आकार देने और उनके ज्ञान और कौशल को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह लक्ष्य-उन्मुख, समेकित और गतिशील होता है, जो छात्रों के लिए एक प्रभावी शिक्षण वातावरण तैयार करता है।

7. Briefly discuss any one method of curriculum transaction. পাঠ্যক্রম সঞ্চালনের যে কোনো একটি পদ্ধতি সংক্ষেপে আলোচনা করুন। पाठ्यक्रम संचालन की किसी एक विधि पर संक्षेप में चर्चा करें। **2019, 2020, 2022**

Ans: <u>परिचय:</u> पाठ्यक्रम संचलन (Curriculum Transaction) उस शैक्षिक प्रक्रिया को कहा जाता है जिसके माध्यम से पाठ्यक्रम विद्यार्थियों तक पहुँचाया जाता है। इसमें विभिन्न शिक्षण तकनीक और विधियाँ शामिल होती हैं, जो शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने और विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव को समृद्ध करने में सहायक होती हैं। इस संदर्भ में, परियोजना-आधारित पद्धति (Project-Based Method) एक प्रभावशाली शिक्षण विधि के रूप में सामने आती है, जो वास्तविक जीवन की समस्याओं के समाधान के माध्यम से व्यावहारिक और अनुभवजन्य शिक्षा पर जोर देती है।

<u>परियोजना-आधारित पद्धति:</u> परियोजना-आधारित पद्धति एक शिक्षण रणनीति है जिसमें विद्यार्थी किसी विशेष परियोजना या समस्या पर काम करते हैं। यह पद्धति सक्रिय शिक्षण, आलोचनात्मक सोच और ज्ञान

के व्यावहारिक अनुप्रयोग को बढ़ावा देती है, जिससे विद्यार्थी वास्तविक जीवन की चुनौतियों के लिए आवश्यक कौशल और दक्षताओं का विकास कर पाते हैं।

विशेषताएँ:

1. **वास्तविक जीवन से सम्बद्धता:** विद्यार्थी केवल सैद्धांतिक ज्ञान याद नहीं करते; वे वास्तविक जीवन की समस्याओं से जुड़कर अपने ज्ञान को लागू करना सीखते हैं। यह पद्धति सिद्धांत और अभ्यास के बीच पुल बनाती है और शिक्षा को अधिक प्रासंगिक और सार्थक बनाती है।
2. **विद्यार्थी-केंद्रित पद्धति:** पारंपरिक विधियों के विपरीत, यहाँ शिक्षा का केंद्र विद्यार्थी होते हैं। विद्यार्थी स्वयं परियोजना की योजना बनाते हैं, उसे कार्यान्वित करते हैं और मूल्यांकन करते हैं, जिससे उनकी सक्रिय भागीदारी और जिम्मेदारी की भावना बढ़ती है।
3. **अनुभवजन्य शिक्षण:** परियोजनाओं पर काम करते समय विद्यार्थी हाथों-हाथ सीखते हैं। अनुभव के माध्यम से ज्ञान अर्जित करना दीर्घकालिक सीखने को सुनिश्चित करता है और विषयों को आसानी से याद रखने में मदद करता है।
4. **सहयोग और टीमवर्क:** परियोजनाएँ अक्सर समूह में काम करने की मांग करती हैं, जिससे सहयोग की भावना, नेतृत्व क्षमता और सामूहिक समस्या-समाधान कौशल विकसित होते हैं।
5. **सृजनात्मकता और नवोन्मेषी सोच:** विद्यार्थी पारंपरिक सोच से बाहर जाकर नए विचार और समाधान खोजने का अवसर पाते हैं। यह उनकी नवाचार क्षमता और स्वतंत्र समस्या-समाधान की योग्यता को बढ़ाता है।
6. **समस्या-समाधान कौशल:** परियोजनाएँ अक्सर वास्तविक समस्याओं के समाधान पर केंद्रित होती हैं। विद्यार्थी विश्लेषणात्मक सोच, निर्णय लेने और प्रभावी कदम उठाने की क्षमता विकसित करते हैं।
7. **स्वशिक्षण और स्वावलंबन:** विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से जानकारी एकत्रित करते हैं, विश्लेषण करते हैं और निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं। इससे आत्मविश्वास और स्वनिर्भरता का विकास होता है।

www.dascoaching.in

8. **बहुविषयक ज्ञान का समावेश:** परियोजनाओं के दौरान गणित, विज्ञान, भाषा और सामाजिक अध्ययन जैसे विभिन्न विषयों का ज्ञान लागू करना पड़ता है। यह अन्तरविषयक शिक्षा को प्रोत्साहित करता है।

9. **संचार कौशल का विकास:** परियोजना के परिणाम प्रस्तुत करने से मौखिक और लिखित दोनों प्रकार के संचार कौशल में सुधार होता है, जो भविष्य में अत्यंत उपयोगी साबित होते हैं।

10. **शिक्षा में उत्साह और संलग्नता:** वास्तविक जीवन की परियोजनाएँ शिक्षा को रोचक और आनंदमय बनाती हैं। यह जिज्ञासा, उत्साह और उपलब्धि की भावना को बढ़ावा देती है, जिससे शिक्षा और अधिक जीवंत और प्रेरक बनती है।

उपसंहार: परियोजना-आधारित पद्धति विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की समस्याओं का सामना करने और उनका समाधान खोजने में सक्षम बनाती है। यह उनकी सृजनात्मकता, शोध कौशल, आलोचनात्मक सोच, टीमवर्क और संचार कौशल को विकसित करती है, साथ ही शिक्षा को अधिक व्यावहारिक और रोचक बनाती है। इस पद्धति से विद्यार्थी सक्रिय, जिम्मेदार और स्व-प्रेरित शिक्षार्थी बनते हैं, जो भविष्य की चुनौतियों का आत्मविश्वास के साथ सामना कर सकते हैं।

8. How various social groups are represented in curriculum framing? পাঠ্যক্রম গঠনে বিভিন্ন সামাজিক দলের প্রতিনিধিত্ব কীভাবে ঘটে? पाठ्यक्रम निर्माण में विभिन्न सामाजिक समूहों का प्रतिनिधित्व कैसे होता है? **2019, 2021, 2023, 2025**

Ans: परिचय: पाठ्यक्रम निर्माण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो छात्रों की शिक्षा और विकास के लिए मूलभूत ढांचा प्रदान करती है। यह समाज के विभिन्न सामाजिक समूहों के मूल्य, आवश्यकताएँ और अपेक्षाओं को प्रतिबिंबित करता है। पाठ्यक्रम में विभिन्न सामाजिक समूहों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना सामाजिक विविधता का सम्मान करता है और शिक्षा की प्रक्रिया में समावेशिता और न्याय सुनिश्चित करता है।

पाठ्यक्रम में विभिन्न सामाजिक समूहों का प्रतिनिधित्व:

1. **सांस्कृतिक समावेशन:** विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं, भाषाओं और इतिहास को शामिल करके, छात्र विभिन्न संस्कृतियों से परिचित होते हैं। उदाहरण के लिए, पाठ्यक्रम में विभिन्न समुदायों के इतिहास, साहित्य और उत्सवों पर चर्चा शामिल की जाती है।
2. **जातीय विविधता:** जातीय समूहों के इतिहास, भाषा और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने से जातीय विविधता का सम्मान होता है और सामाजिक समन्वय को बढ़ावा मिलता है।
3. **लिंग समानता:** पाठ्यक्रम में लिंग समानता और महिला शिक्षा पर जोर दिया जाता है। महिलाओं के इतिहास, उपलब्धियों और सामाजिक योगदान को उजागर करके लिंग समानता का संदेश प्रचारित किया जाता है।
4. **लिंग विविधता:** विभिन्न लिंग पहचान और उनके अनुभवों को शामिल करने से समानता और समावेशन में सुधार होता है।
5. **सामाजिक-आर्थिक वर्ग:** निम्न आय और पिछड़े वर्गों के अनुभव और चुनौतियों का प्रतिनिधित्व छात्रों में सामाजिक जागरूकता बढ़ाता है और सहानुभूति व सामाजिक जिम्मेदारी विकसित करता है।
6. **वर्ग आधारित विविधता:** विभिन्न सामाजिक वर्गों के जीवन, आदतों और वास्तविकताओं को शामिल करके छात्रों को विभिन्न सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों से परिचित कराया जाता है।
7. **सुलभता (Accessibility):** पाठ्यक्रम में विकलांग व्यक्तियों के जीवन, चुनौतियों और योगदान को महत्व दिया जाता है, जिससे छात्रों में सहानुभूति और सहायता की भावना विकसित होती है।
8. **सहायक सामग्री:** विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों के लिए सहायक संसाधन और पद्धतियाँ शामिल की जाती हैं ताकि वे प्रभावी ढंग से शिक्षा ग्रहण कर सकें।

निष्कर्ष: पाठ्यक्रम में विभिन्न सामाजिक समूहों का प्रतिनिधित्व शिक्षा में विविधता और समावेशिता पर जोर देता है। यह छात्रों को एक समग्र और सामाजिक रूप से जागरूक दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संबंध और समझ को बेहतर बनाता है। सामाजिक विविधता को प्रतिबिंबित करके

www.dascoaching.in

पाठ्यक्रम एक न्यायसंगत और सहानुभूतिपूर्ण शैक्षिक वातावरण बनाने में मदद करता है, जो समाज में शांति और समन्वय को बढ़ावा देता है।

9. Write a note on Summative Evaluation. সমষ্টিগত মূল্যায়নের উপর একটি টীকা লিখুন। समष्टिगत मूल्यांकन पर एक टिप्पणी लिखिए। **2019, 2020, 2022**

Ans: <u>परिचय:</u> सारांशात्मक मूल्यांकन (Summative Evaluation) शिक्षण का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसका उपयोग छात्रों की सीखने की उपलब्धियों और किसी कार्यक्रम की कुल प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह सामान्यतः किसी निश्चित समय, जैसे सेमेस्टर या कोर्स के अंत में किया जाता है और छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों का मापन प्रदान करता है। इसका उद्देश्य शिक्षा की कुल गुणवत्ता और छात्रों की उपलब्धियों का मूल्यांकन करना है।

विवरण:

1. उद्देश्य और विशेषताएँ:

a) **परिणाम मूल्यांकन:** सारांशात्मक मूल्यांकन छात्रों की सीखने की उपलब्धियों को निर्धारित करता है और उनकी कुल प्रगति का मूल्यांकन करता है। यह ग्रेड या स्कोर प्रदान करता है जो उनके अधिग्रहीत ज्ञान का स्तर दर्शाता है।

b) **निर्धारित समय पर संपन्न:** यह आमतौर पर किसी कोर्स, सेमेस्टर या शैक्षणिक वर्ष के अंत में किया जाता है और इसमें विशिष्ट परीक्षा, परियोजना या अन्य मूल्यांकन पद्धतियाँ शामिल होती हैं।

c) **योजना और रिपोर्टिंग:** शिक्षा की योजना और प्रभावशीलता की समीक्षा करता है और आवश्यक सुधार या बदलाव के लिए सुझाव प्रदान करता है।

2. लाभ:

a) **सफलता मापन:** छात्रों की सीखने की सफलता मापने और शिक्षा कार्यक्रमों के प्रभाव का मूल्यांकन करने में मदद करता है।

b) **परिणाम-आधारित निर्णय:** परिणामों के आधार पर शिक्षा नीतियों और योजनाओं के लिए निर्णय लेने में सहायक, जैसे ग्रेडिंग, प्रदर्शन विश्लेषण और कार्यक्रम संशोधन।

c) **प्रशिक्षण और विकास:** शिक्षकों के प्रशिक्षण और कार्यक्रम सुधार में मदद करता है, क्योंकि यह शिक्षण विधियों और रणनीतियों की प्रभावशीलता की समीक्षा में सहायक होता है।

निष्कर्ष: सारांशात्मक मूल्यांकन शिक्षण का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो छात्रों की सीखने की उपलब्धियों का मापन करता है और शिक्षा कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करता है। यह शिक्षकों, छात्रों और शैक्षणिक संस्थानों को विकासात्मक कदम उठाने के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है। सीखने के परिणामों और प्रभावों का मूल्यांकन करके यह शिक्षा की गुणवत्ता और छात्रों की कुल उपलब्धियों को बढ़ाने में सहायक होता है।

10. Show your acquaintance with different types of school-time-table. বিদ্যালয়ের বিভিন্ন ধরনের সময়-সারণীর সাথে আপনার পরিচিতি জ্ঞাপন করুন। विद्यालय की विभिन्न प्रकार की समय सारणियों से अपनी परिचितता दिखाइए। **2019, 2022, 2025**

Ans: भूमिका: समय-सारणी किसी शैक्षणिक संस्था की दैनिक गतिविधियों को सुव्यवस्थित और संगठित बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण साधन है। यह विद्यार्थियों को कक्षा कार्यक्रम, विशेष पाठ्यक्रम, परीक्षा समय-सारणी और अन्य विद्यालयी गतिविधियों का एक योजनाबद्ध ढांचा प्रदान करती है। सही ढंग से बनाई गई समय-सारणी विद्यार्थियों को समय प्रबंधन, अध्ययन और सामाजिक गतिविधियों के बीच संतुलन बनाए रखने में सहायक होती है।

<u>समय-सारणी के विभिन्न प्रकार:</u>

1. **साप्ताहिक समय-सारणी:** प्रत्येक सप्ताह के लिए सामूहिक रूप से बनाई गई कक्षाओं की योजना। इसमें आम तौर पर कक्षा का समय, अवकाश और अन्य गतिविधियाँ साप्ताहिक आधार पर शामिल रहती हैं। **प्रयोग:** सामान्य विद्यालयों में साप्ताहिक पाठ योजना और दैनिक कार्यों के लिए।

2. **दैनिक समय-सारणी:** प्रतिदिन की कक्षाओं का निश्चित समय। यह प्रत्येक दिन के कक्षा समय, अवकाश और गतिविधियों को चिन्हित करती है। **प्रयोग:** प्रतिदिन की पढ़ाई और गतिविधियों के संचालन के लिए।

3. **अभिनव समय-सारणी:** इसमें विभिन्न प्रकार की शिक्षा व गतिविधियाँ शामिल रहती हैं जैसे प्रोजेक्ट कार्य, क्लब गतिविधियाँ और विशेष कक्षाएँ। **प्रयोग:** नियमित पाठ्यक्रम से बाहर विशेष परियोजनाओं और गतिविधियों के लिए।

4. **विभागीय समय-सारणी:** अलग-अलग विभागों के लिए अलग-अलग समय-सारणी, जैसे प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक। **प्रयोग:** विभिन्न आयु और स्तर के विद्यार्थियों के अनुसार उपयुक्त कक्षा समय निर्धारण के लिए।

5. **परीक्षा समय-सारणी:** परीक्षाओं का समय व तिथियों की योजना। इसमें परीक्षा के विषय, तिथि, समय और अन्य संबंधित जानकारी शामिल रहती है। **प्रयोग:** परीक्षा की तैयारी और संचालन के लिए।

6. **विशेष गतिविधि समय-सारणी:** विद्यालय की विशेष गतिविधियों जैसे खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम और संगोष्ठियों के लिए समय योजना। **प्रयोग:** विशेष गतिविधियों के संचालन और समय निर्धारण के लिए।

निष्कर्ष: विभिन्न प्रकार की समय-सारणी विद्यालयी गतिविधियों की योजना और प्रबंधन को प्रभावी बनाती है। यह विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम, कक्षा समय और विशेष गतिविधियों में संतुलन बनाए रखने में मदद करती है। एक सुव्यवस्थित समय-सारणी शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाती है और विद्यार्थियों को प्रभावी समय प्रबंधन का अवसर देती है। विद्यालय प्रशासन को प्रत्येक विभाग की आवश्यकता के अनुसार उचित समय-सारणी तैयार करनी चाहिए, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता और प्रभावशीलता में वृद्धि हो।

www.dascoaching.in

11. Briefly discuss any two characteristics of a curriculum. একটি পাঠ্যক্রমের যে কোনো দুটি বৈশিষ্ট্য সংক্ষেপে আলোচনা করুন। पाठ्यक्रम की कोई दो विशेषताओं पर संक्षेप में चर्चा करें। **2021**

Ans: <u>प्रस्तावना:</u> शिक्षाशास्त्र की शब्दावली में, 'पाठ्यचर्या' (Curriculum) किसी विशिष्ट शैक्षिक स्तर पर शिक्षार्थी के समग्र विकास के लक्ष्य के लिए तैयार की गई विषय-वस्तु, सीखने के अनुभव और मूल्यांकन विधियों का एक सुव्यवस्थित रूपरेखा है। यह केवल पाठ्यपुस्तकों की विषय-वस्तु का योग नहीं है, बल्कि विद्यालय के भीतर और बाहर के वातावरण के सभी अनुभवों का एक नियोजित मिश्रण है। नीचे पाठ्यचर्या की दो महत्वपूर्ण विशेषताओं की चर्चा की गई है।

1. पाठ्यचर्या अनुभवों की समग्रता है (Curriculum as a Totality of Experiences): आधुनिक शिक्षाशास्त्र में पाठ्यचर्या को केवल विषय-आधारित ज्ञान का भंडार नहीं माना जाता है। पाठ्यचर्या की एक मुख्य विशेषता यह है कि यह शिक्षार्थी के समग्र अनुभवों को दर्शाती है। विद्यालय की कक्षा में प्राप्त सैद्धांतिक ज्ञान और कक्षा के बाहर विभिन्न सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों (Co-curricular activities) जैसे—खेल-कूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद-विवाद, एन.सी.सी या समाज सेवा के माध्यम से शिक्षार्थी जो भी अनुभव संचित करता है, वे सभी पाठ्यचर्या के अंतर्गत आते हैं। इसके माध्यम से शिक्षार्थी के बौद्धिक विकास के साथ-साथ शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। संक्षेप में, यह शिक्षार्थी के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक प्रत्येक नियोजित और अनियोजित अनुभव को समाहित करती है।

2. पाठ्यचर्या गतिशील और परिवर्तनशील है (Curriculum is Dynamic and Changeable): पाठ्यचर्या कोई स्थिर या अपरिवर्तनीय विषय नहीं है; यह समाज की मांग और समय के साथ-साथ निरंतर बदलती रहती है। चूँकि शिक्षा व्यवस्था समाज का एक अभिन्न अंग है और समाज सदैव विकासशील है, इसलिए पाठ्यचर्या को भी नए ज्ञान, तकनीक और मूल्यों के साथ तालमेल बिठाना पड़ता है। समाज की परिवर्तित आर्थिक स्थिति, राजनीतिक पृष्ठभूमि, प्रौद्योगिकी का तीव्र विकास और शिक्षार्थियों की बदलती मनोवैज्ञानिक जरूरतों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यचर्या को नियमित रूप से परिमार्जित और परिवर्धित किया जाना चाहिए। यह गतिशीलता पाठ्यचर्या को प्रासंगिक और यथार्थवादी बनाती है, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षार्थी भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हो सकते हैं।

<u>निष्कर्ष:</u> अंत में यह कहा जा सकता है कि पाठ्यचर्या शिक्षा का मूल आधार या रीढ़ है। एक सुव्यवस्थित पाठ्यचर्या शिक्षार्थी की अंतर्निहित संभावनाओं के विकास में और उसे एक आदर्श नागरिक के रूप में

ढालने में अनिवार्य भूमिका निभाती है। अनुभवों का समन्वय और समय के साथ परिवर्तनशीलता—ये दोनों विशेषताएँ ही एक पाठ्यचर्या को सार्थक और जीवंत बनाती हैं, जो अंततः राष्ट्रीय विकास का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

12. Differentiate between formative and summative evaluation. গঠনমূলক মূল্যায়ন ও সমষ্টিগত মূল্যায়নের পার্থক্য লিখুন। गठनात्मक और समष्टिगत मूल्यांकन में अंतर लिखिए। **2023**

Ans: <u>भूमिका:</u> शिक्षा प्रणाली में मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह छात्रों की सीखने की प्रगति को निर्धारित करने और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करता है। सीखने की प्रक्रिया को बढ़ाने के लिए रचनात्मक मूल्यांकन और योगात्मक मूल्यांकन दोनों का उपयोग किया जाता है, लेकिन उनके उद्देश्य और तरीके अलग-अलग हैं।

<u>Differentiate between formative and summative evaluation:</u>

पहलू	प्रारूपिक मूल्यांकन (Formative Assessment)	समष्टिगत मूल्यांकन (Summative Assessment)
1. उद्देश्य	सीखने की प्रक्रिया के दौरान छात्रों की प्रगति, कठिनाइयाँ और कमियाँ पहचानना। इसका लक्ष्य है सीखने में सुधार करना और तुरंत आवश्यक बदलाव लाना।	छात्रों के सीखने के अंतिम परिणाम का मूल्यांकन करना। उद्देश्य है अर्जित ज्ञान, कौशल और सफलता की पुष्टि करना।
2. उपयोग	पाठ्यक्रम के दौरान नियमित रूप से प्रयोग किया जाता है। उदाहरण: छोटे क्विज़, कक्षा चर्चा, अवलोकन, प्रोजेक्ट कार्य, होमवर्क, समूह गतिविधियाँ।	आमतौर पर पाठ्यक्रम या सत्र के अंत में प्रयोग होता है। उदाहरण: अंतिम परीक्षा, सेमेस्टर परीक्षा, वार्षिक प्रोजेक्ट, शोध-प्रबंध।
3. फीडबैक का स्वरूप	निरंतर, नियमित और त्वरित फीडबैक। यह छात्रों को अपनी ताकत और कमजोरियाँ समझने में मदद करता है तथा शिक्षक अपनी पद्धति बदल सकते हैं।	अंतिम और संक्षिप्त फीडबैक, जो प्रायः अंकों या ग्रेड के रूप में मिलता है। सुधार का अवसर कम होता है, यह केवल उपलब्धि दर्शाता है।
4. समय	सीखने की प्रक्रिया के दौरान कई चरणों पर—जैसे पाठ के बीच में, किसी गतिविधि के	सीखने की प्रक्रिया समाप्त होने के बाद—जैसे सत्र के अंत, वर्ष के अंत या कोर्स पूरा

	बाद या एक मॉड्यूल के अंत में।	होने पर।
5. महत्व	सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा, जो सुधार और कौशल-विकास का मार्गदर्शन करता है।	अर्जित ज्ञान और सफलता की पुष्टि करता है; यह प्रदर्शन का प्रमाण पत्र होता है।
6. ग्रेडिंग	अक्सर अंक नहीं दिए जाते; गुणात्मक फीडबैक और सुझाव पर अधिक जोर दिया जाता है।	प्रायः अंक या ग्रेड दिए जाते हैं, जो अंतिम प्रदर्शन को दर्शाते हैं।
7. परिणाम का उपयोग	कमियाँ पहचान कर तुरंत सुधार का अवसर देता है; शिक्षक भी अपनी शिक्षण-रणनीति बदल सकते हैं।	समग्र प्रदर्शन की रिपोर्ट देता है; प्रमोशन, एडमिशन या प्रमाणन के लिए उपयोग किया जाता है।
8. उदाहरण	साप्ताहिक क्विज़, छोटे टेस्ट, मौखिक प्रश्न, सहपाठी मूल्यांकन, होमवर्क की समीक्षा।	वार्षिक परीक्षा, बोर्ड परीक्षा, सेमेस्टर फाइनल, कैप्स्टोन प्रोजेक्ट या शोध प्रबंध का मूल्यांकन।

निष्कर्ष: रचनात्मक मूल्यांकन और योगात्मक मूल्यांकन दोनों ही शिक्षा के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं, लेकिन उनके उपयोग का उद्देश्य और प्रक्रिया अलग है। रचनात्मक मूल्यांकन सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए तत्काल और निरंतर प्रतिक्रिया प्रदान करता है, जो छात्रों को सुधार करने में मदद करता है। दूसरी ओर, योगात्मक मूल्यांकन एक छात्र के अंतिम परिणामों और उपलब्धियों की समीक्षा प्रदान करता है, जिसका उपयोग शैक्षणिक संस्थानों में अंतिम मूल्यांकन के हिस्से के रूप में किया जाता है। दोनों प्रकार के मूल्यांकन शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने और छात्रों के समग्र विकास में सहायक होते हैं।

13. Explain the relationship between structure of society and power. সমাজের কাঠামো ও ক্ষমতার মধ্যে সম্পর্কটি ব্যাখ্যা করুন। समाज की संरचना और सत्ता के बीच संबंध को स्पष्ट कीजिए। **2023**

Ans: **प्रस्तावना:** समाज की संरचना और शक्ति के बीच का संबंध अत्यंत गहरा और परस्पर निर्भर है। समाजशास्त्र और शिक्षाशास्त्र के संदर्भ में, समाज की संरचना एक सुव्यवस्थित व्यवस्था है जो विभिन्न सामाजिक समूहों, संस्थानों और संबंधों से बनी है। दूसरी ओर, शक्ति का अर्थ है अन्य व्यक्तियों के व्यवहार

या सामाजिक स्थितियों को प्रभावित करने या नियंत्रित करने की क्षमता। समाज का संरचनात्मक विन्यास ही यह निर्धारित करता है कि शक्ति किसके पास होगी और कौन उस शक्ति के प्रभाव में रहेगा।

समाज की संरचना और शक्ति के संबंधों के मुख्य आधार निम्नलिखित हैं:

1. **वर्ग विभाजन और प्रभुत्व:** कार्ल मार्क्स के सिद्धांत के अनुसार, समाज की आर्थिक संरचना ही शक्ति का मुख्य स्रोत है। जो लोग उत्पादन के साधनों के स्वामी (उच्च वर्ग या बुर्जुआ वर्ग) हैं, वे राजनीतिक और सामाजिक शक्ति को नियंत्रित करते हैं। परिणामस्वरूप, सामाजिक संरचना में जिनका स्थान ऊपर है, वे अपने हितों की रक्षा के लिए आसानी से शक्ति का प्रयोग कर सकते हैं।
2. **संस्थागत नियंत्रण:** परिवार, शिक्षण संस्थान, धर्म और राज्य समाज की संरचना के मुख्य स्तंभ हैं। शक्ति इन संस्थानों के माध्यम से संचालित होती है। उदाहरण के लिए, जब शिक्षा प्रणाली किसी विशेष विचारधारा या ज्ञान को प्राथमिकता देती है, तो यह सामाजिक संरचना का संतुलन बनाए रखने के लिए शक्ति के एक उपकरण के रूप में कार्य करती है।
3. **सांस्कृतिक पूंजी और शक्ति:** फ्रांसीसी समाजशास्त्री पियरे बोर्दियू के अनुसार, सामाजिक संरचना में शक्ति का वितरण केवल धन पर ही निर्भर नहीं करता, बल्कि 'सांस्कृतिक पूंजी' यानी विशेष ज्ञान, भाषा और व्यवहार पर भी निर्भर करता है। समाज की उच्च संरचना के लोग इस पूंजी का उपयोग करके अपनी शक्ति को वैधता प्रदान करते हैं।
4. **सामाजिक स्तरीकरण:** समाज की संरचना में उच्च और निम्न वर्गों के बीच जो स्तरीकरण होता है, वह शक्ति का असमान वितरण करता है। यह संरचनात्मक असमानता ही शक्ति के संघर्ष को जन्म देती है, जो परिवर्तन या क्रांति के माध्यम से सामाजिक ढांचे को नया रूप देने का प्रयास करती है।
5. **शिक्षा और सशक्तिकरण:** बी.एड (B.Ed) पाठ्यक्रम के संदर्भ में, शिक्षा का उद्देश्य इस शक्ति असंतुलन को दूर करना है। लोकतांत्रिक सामाजिक संरचना में शिक्षा के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने के बाद, व्यक्ति केवल शक्ति का अनुगामी नहीं रहता, बल्कि एक जागरूक नागरिक के रूप में शक्ति के दुरुपयोग को रोकना सीखता है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि समाज की संरचना और शक्ति का संबंध द्वि-आयामी है। संरचना शक्ति को धारण करती है और उसे परिभाषित करती है, वहीं शक्ति उस संरचना को बनाए रखती है या उसे बदल देती है। एक स्वस्थ और प्रगतिशील समाज के निर्माण के लिए शक्ति का समान वितरण और संरचनात्मक समानता अनिवार्य है। शिक्षा का मुख्य लक्ष्य ऐसी जागरूकता पैदा करना होना चाहिए, जो

www.dascoaching.in

शक्ति के दुरुपयोग को रोककर समानता के आधार पर एक न्यायपूर्ण सामाजिक ढांचा स्थापित करने में सक्षम हो।

14. Write a short note on "Curriculum Evaluation". পাঠ্যক্রম মূল্যায়নের উপর একটি সংক্ষিপ্ত টীকা লিখুন। "पाठ्यक्रम मूल्यांकन" पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। **2023**

Ans: <u>भूमिका:</u> पाठ्यक्रम मूल्यांकन शिक्षा के विभिन्न पहलुओं, जैसे पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता, शिक्षण की गुणवत्ता और छात्रों की उपलब्धि का आकलन करने के लिए उपयोग की जाने वाली एक प्रक्रिया है। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना और शिक्षण विधियों की उपयुक्तता सुनिश्चित करना है।

<u>पाठ्यक्रम मूल्यांकन पर एक संक्षिप्त नोट:</u>

<u>मूल्यांकन का महत्व:</u>

1. **प्रभावशीलता का आकलन:** पाठ्यक्रम के प्रभाव और प्रभावशीलता की समीक्षा करके, यह सुनिश्चित किया जाता है कि पाठ्यक्रम छात्रों की सीखने की जरूरतों को पूरा करता है।
2. **गुणवत्ता में सुधार:** शिक्षा की गुणवत्ता और परिणामों में सुधार के लिए सुझाव दिए जाते हैं, और शिक्षण विधियों को बदला या समायोजित किया जाता है।

<u>मूल्यांकन के चरण:</u>

1. **लक्ष्य निर्धारण:** मूल्यांकन के उद्देश्यों और लक्ष्यों को निर्धारित किया जाता है, जैसे सीखने के परिणाम, छात्रों की उपलब्धि और पाठ्यक्रम की समग्र प्रभावशीलता।
2. **डेटा संग्रह:** छात्रों की परीक्षाओं, शिक्षकों की प्रतिक्रिया और पाठ्यक्रम के अन्य घटकों से जानकारी एकत्र की जाती है।
3. **विश्लेषण:** एकत्रित डेटा का विश्लेषण करके पाठ्यक्रम की शक्तियों और कमजोरियों की पहचान की जाती है।

www.dascoaching.in

4. **प्रतिक्रिया और सुझाव:** परिणामों के आधार पर, आवश्यक परिवर्तनों या सुधारों के लिए सिफारिशें की जाती हैं।

निष्कर्ष: शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए पाठ्यक्रम मूल्यांकन अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक परिवर्तनों और सुधारों के लिए प्रस्ताव प्रदान करता है और छात्रों को आवश्यक कौशल और ज्ञान प्राप्त करने में मदद करता है। एक प्रभावी मूल्यांकन प्रक्रिया शिक्षा की सफलता सुनिश्चित करती है और शिक्षण विधियों के विकास में सहायता करती है।

15. Briefly discuss the 'Product Theory' of curriculum development. পাঠক্রম উন্নয়নের ফলাফল তত্ত্বটি সংক্ষেপে আলোচনা করুন। पाठ्यक्रम विकास के 'उत्पाद सिद्धांत' पर संक्षेप में चर्चा करें। **2024**

Ans: प्रस्तावना: शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम एक नियोजित रोडमैप के रूप में कार्य करता है जो छात्र के सीखने के अनुभव को नियंत्रित करता है। पाठ्यक्रम विकास के विभिन्न दृष्टिकोणों में, **'प्रोडक्ट थ्योरी' (परिणाम सिद्धांत)** एक अत्यंत लोकप्रिय और प्रभावी पद्धति है। यह सिद्धांत मुख्य रूप से शैक्षिक लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने पर आधारित है, जहाँ पाठ्यक्रम को एक उत्पाद या निर्मित वस्तु के रूप में देखा जाता है।

प्रोडक्ट थ्योरी की मुख्य विशेषताएं: प्रोडक्ट थ्योरी का मुख्य उद्देश्य शिक्षा को एक निश्चित गंतव्य की ओर ले जाना है। इस सिद्धांत के मुख्य पहलुओं पर नीचे चर्चा की गई है-

1. **उद्देश्य-केंद्रित:** यह सिद्धांत "पहले लक्ष्य निर्धारित करना, फिर पाठ्यक्रम बनाना" के सिद्धांत पर आधारित है। यहाँ मुख्य उद्देश्य छात्र में वांछित व्यवहार परिवर्तन लाना है।
2. **विशिष्ट परिणाम:** इस सिद्धांत में, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के अंत में छात्र की दक्षता कैसी होगी, यह पहले से ही निर्धारित कर दिया जाता है। कारखाने में उत्पाद बनाने की तरह, इसका मुख्य उद्देश्य छात्र को शिक्षा के अंत में एक निश्चित कौशल से संपन्न बनाना है।
3. **मूल्यांकन पद्धति:** इस सिद्धांत में सफलता का पैमाना परिणाम है। छात्र द्वारा अर्जित ज्ञान और कौशल को मापने के लिए एक कठोर मूल्यांकन प्रणाली रखी जाती है। यदि छात्र लक्ष्य प्राप्त कर लेता है, तभी पाठ्यक्रम को सफल माना जाता है।

4. **दक्षता-आधारित (Competency-based):** यह सैद्धांतिक शिक्षा की तुलना में व्यावहारिक कौशल पर अधिक जोर देता है, ताकि छात्र कार्यक्षेत्र में जल्दी ढल सके।

लाभ और सीमाएँ: इस सिद्धांत का लाभ यह है कि यह शिक्षण प्रक्रिया को अत्यंत अनुशासित और लक्ष्य-उन्मुख बनाता है। शिक्षक और छात्र दोनों को पता होता है कि उन्हें वास्तव में क्या हासिल करना है। हालाँकि, इसकी सीमाएँ भी हैं—इस पद्धति में रचनात्मकता और छात्र की व्यक्तिगत आवश्यकताओं की तुलना में परिणामों को अधिक महत्व देने के कारण शिक्षा के मानवीय पहलू की कभी-कभी अनदेखी हो जाती है।

निष्कर्ष: अंततः यह कहा जा सकता है कि पाठ्यक्रम विकास की 'प्रोडक्ट थ्योरी' आधुनिक शिक्षा प्रणाली में कौशल प्राप्त करने का एक शक्तिशाली उपकरण है। बी.एड. (B.Ed.) पाठ्यक्रम के संदर्भ में, एक शिक्षक के रूप में इस सिद्धांत का अनुप्रयोग न केवल छात्र के अधिगम को सुव्यवस्थित करता है, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में भी मदद करता है। हालाँकि, हमें केवल परिणामों पर ध्यान न देकर छात्र के समग्र विकास पर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

16. What are the major steps for critical analysis of text book? পাঠ্যপুস্তকের সমালোচনামূলক বিশ্লেষণের প্রধান ধাপগুলি উল্লেখ করুন। पाठ्यपुस्तक के आलोचनात्मक विश्लेषण के मुख्य चरण कौन-कौन से हैं? **2024**

Ans: प्रस्तावना: शिक्षाशास्त्र में पाठ्यपुस्तक पाठ्यक्रम को लागू करने का मुख्य उपकरण है। पाठ्यपुस्तक के आलोचनात्मक विश्लेषण का अर्थ केवल उसकी विषयवस्तु का सारांश प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि यह एक गहरा और निष्पक्ष मूल्यांकन है कि पाठ्यपुस्तक छात्रों के ज्ञानार्जन, मानसिक विकास और सामाजिक मूल्यों के निर्माण में कितनी सक्षम है। बी.एड. पाठ्यक्रम के 'ज्ञान और पाठ्यचर्या' (Knowledge and Curriculum) विषय के अंतर्गत एक भावी शिक्षक के लिए इस विश्लेषण का महत्व अत्यंत अधिक है।

मुख्य चरण:

1. **उद्देश्य और दर्शन की जांच:** सबसे पहले यह देखना आवश्यक है कि पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF) के दिशानिर्देशों और विषय विशेष के शैक्षिक उद्देश्यों के साथ कितनी सुसंगत है। क्या यह केवल जानकारी प्रदान करती है, या छात्र की चिंतन शक्ति और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करती है?

2. **विषयवस्तु का विश्लेषण (Content Analysis):** विषयवस्तु की गहराई, सटीकता, प्रासंगिकता और आधुनिक जानकारी की उपलब्धता की जांच करना। क्या सामग्री स्तर के अनुकूल है? क्या जानकारी का क्रम तर्कसंगत है? साथ ही, क्या तथ्य पक्षपात मुक्त और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से युक्त हैं?
3. **भाषाई शैली और प्रस्तुति:** क्या भाषा छात्रों की आयु के अनुकूल और समझने योग्य है? क्या शब्दों का चयन और वाक्य संरचना जटिल है या सरल? चित्रों, ग्राफ, चार्ट और उदाहरणों का उपयोग विषय को स्पष्ट करने में सहायक है या नहीं, इसकी जांच करना महत्वपूर्ण है।
4. **शिक्षण-अधिगम रणनीतियाँ और अभ्यास:** पाठ्यपुस्तक में किस प्रकार की शिक्षण विधियों का संकेत दिया गया है, क्या वे छात्रों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने में सक्षम हैं? क्या अध्याय के अंत में दिए गए अभ्यास केवल स्मृति परीक्षण लेते हैं, या छात्र के विश्लेषणात्मक और व्यावहारिक कौशल का विकास करते हैं?
5. **मूल्य और सामाजिक दृष्टिकोण:** यह विश्लेषण करना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि पाठ्यपुस्तक में लैंगिक तटस्थता, सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता और मानवाधिकारों का प्रतिबिंब है या नहीं। क्या इसमें किसी विशेष समूह के प्रति भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण को स्थान मिला है?
6. **डिजाइन और भौतिक संरचना:** छपाई की गुणवत्ता, कागज की गुणवत्ता, अक्षरों का आकार और बाइंडिंग—ये बाहरी कारक भी छात्र की पढ़ने में रुचि पैदा करने में भूमिका निभाते हैं।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, पाठ्यपुस्तक का आलोचनात्मक विश्लेषण किसी एक पद्धति पर निर्भर नहीं करता; यह एक समग्र प्रक्रिया है। एक आदर्श शिक्षक इस विश्लेषण के माध्यम से समझ सकता है कि पाठ्यपुस्तक कक्षा की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है या नहीं। आलोचनात्मक दृष्टिकोण शिक्षक को पाठ्यपुस्तक की सीमाओं से आगे बढ़ने और पूरक शिक्षण-सामग्री के उपयोग के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाने में मदद करता है। इसलिए, आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पाठ्यपुस्तकों की यह समीक्षा अपरिहार्य है।

17. State the different aspects of value crisis. মূল্যবোধ সঙ্কটের বিভিন্ন দিকগুলি বিবৃত করুন। मूल्य संकट के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट कीजिए। **2024**

Ans: **प्रस्तावना:** वैश्वीकरण के वर्तमान युग में समाज और संस्कृति के तेजी से बदलते स्वरूप के साथ मानव जीवन शैली में जो आमूलचूल परिवर्तन आए हैं, उनका एक नकारात्मक पहलू 'मूल्यों का संकट' (Crisis of

Values) है। मूल्य मानवीय व्यवहार के वे मानदंड हैं, जो समाज और व्यक्तिगत जीवन में सही-गलत और न्याय-अन्याय का निर्धारण करते हैं। जब किसी समाज में पुराने मूल्य अपनी प्रभावशीलता खो देते हैं लेकिन नए सुसंगठित मूल्य स्थापित नहीं हो पाते, तो उस अराजक स्थिति को 'मूल्यों का संकट' कहा जाता है। शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य छात्रों में स्वस्थ मूल्यों का विकास करना है, इसलिए ज्ञान और पाठ्यक्रम के संदर्भ में इस संकट को समझना अत्यंत आवश्यक है।

मूल्य संकट के विभिन्न आयाम: मूल्यों का संकट किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बहुआयामी है। इसके प्रमुख पहलुओं की चर्चा नीचे की गई है-

1. **नैतिक और चारित्रिक पतन:** वर्तमान में लोगों में स्वार्थ, ईमानदारी की कमी और नैतिक आदर्शों के प्रति अरुचि बढ़ गई है। सत्ता के लोभ और त्वरित सफलता की चाहत में लोग अनैतिक मार्ग चुनने में संकोच नहीं कर रहे हैं, जो चारित्रिक स्खलन का एक बड़ा कारण है।
2. **सामाजिक और पारिवारिक विखंडन:** संयुक्त परिवारों के टूटने और एकल परिवार की प्रवृत्ति तथा यांत्रिक जीवनशैली के कारण आपसी सम्मान, सहानुभूति और पारिवारिक बंधन कमजोर हो गए हैं। परिणामस्वरूप, बुजुर्गों के प्रति उपेक्षा और सामाजिक संबंधों में गिरावट आ रही है।
3. **सांस्कृतिक और पारंपरिक संकट:** पश्चिमी संस्कृति के अंधानुकरण के कारण हमारी अपनी परंपराओं, भाषा और संस्कृति के प्रति अनादर पैदा हो गया है। अपनी जड़ों के प्रति उदासीनता और अपसंस्कृति का आक्रमण युवा पीढ़ी के मूल्यों को भ्रमित कर रहा है।
4. **आर्थिक और भौतिकवादी मानसिकता:** वर्तमान समाज व्यवस्था अत्यधिक भौतिकवादी है। व्यक्ति का मूल्य अब उसके व्यक्तित्व या गुणों के बजाय उसकी आर्थिक संपन्नता पर अधिक निर्भर है। नतीजतन, "जो कुछ महंगा है, वही श्रेष्ठ है"—यह भ्रामक धारणा समाज में भ्रष्टाचार और असमानता को बढ़ावा दे रही है।
5. **राजनीतिक और प्रशासनिक अस्थिरता:** राजनीति में आदर्शों की तुलना में सत्ता का वर्चस्व अधिक दिखाई दे रहा है। भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और प्रशासनिक कार्यों में पारदर्शिता का अभाव समाज में निराशा और मूल्यहीनता को बढ़ावा दे रहा है।
6. **शिक्षा का व्यवसायीकरण:** शिक्षा आज ज्ञान अर्जन के बजाय केवल सर्टिफिकेट और रोजगारोन्मुखी व्यापार बनकर रह गई है। शिक्षा का मूल उद्देश्य 'मानव निर्माण' गौण होने के कारण छात्रों में सामाजिक उत्तरदायित्व की कमी देखी जा रही है।

निष्कर्ष: अंत में यह कहा जा सकता है कि मूल्यों का संकट आधुनिक सभ्यता की एक जटिल बीमारी है। इस संकट से उबरने में परिवार, समाज और विशेष रूप से शिक्षण संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में मानवीय गुणों, सहनशीलता और सामाजिक जागरूकता को जागृत करके और आदर्शों के अभ्यास को प्रोत्साहित करके ही इस संकट से पार पाया जा सकता है। मूल्यों का पुनरुद्धार ही एक स्वस्थ और सुंदर समाज का निर्माण कर सकता है।

18. Briefly explain the determinants of curriculum Development. পাঠ্যক্রম উন্নয়নের নির্ধারকসমূহ সংক্ষেপে ব্যাখ্যা করো। पाठ्यक्रम विकास के निर्धारकों की संक्षेप में व्याख्या कीजिए। **2025**

Ans: **प्रस्तावना:** शिक्षा प्रक्रिया का केंद्र बिंदु पाठ्यचर्या (Curriculum) है। पाठ्यचर्या एक नियोजित दस्तावेज है जो शिक्षार्थी को विशिष्ट लक्ष्यों की ओर निर्देशित करता है। पाठ्यचर्या विकास कोई पृथक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह समाज, राष्ट्र और शिक्षार्थी की आवश्यकताओं से गहराई से जुड़ी है। शिक्षा के उद्देश्यों को साकार करने के लिए पाठ्यचर्या विकास के समय कुछ महत्वपूर्ण कारकों या निर्धारकों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

पाठ्यचर्या विकास के मुख्य निर्धारक:

1. **शिक्षार्थी की आवश्यकताएं और विशेषताएं (Learners' Needs and Characteristics):** पाठ्यचर्या का मुख्य केंद्र बिंदु शिक्षार्थी है। शिक्षार्थी की आयु, मानसिक विकास, बौद्धिक क्षमता, रुचि और सामाजिक पृष्ठभूमि पाठ्यचर्या तैयार करते समय प्रमुख विचारणीय विषय हैं। यदि शिक्षार्थी के विकास के स्तर के अनुसार विषयवस्तु का चयन नहीं किया जाता है, तो शिक्षा का उद्देश्य विफल हो जाता है।
2. **समाज की आवश्यकताएं और मूल्य (Social Needs and Values):** शिक्षा समाज-केंद्रित है। समाज किस प्रकार के नागरिकों की अपेक्षा करता है, सामाजिक समस्याएं क्या हैं और संस्कृति की बदलती धाराएं पाठ्यचर्या को कैसे प्रभावित करती हैं, यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। समकालीन समाज की आवश्यकताओं और नैतिक मूल्यों का प्रतिबिंब पाठ्यचर्या में होना वांछनीय है।
3. **राष्ट्रीय लक्ष्य और आदर्श (National Goals and Ideals):** प्रत्येक राष्ट्र के अपने राजनीतिक, आर्थिक और वैचारिक लक्ष्य होते हैं। हमारे देश के संविधान में वर्णित लोकतांत्रिक चेतना,

धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रीय अखंडता और स्वतंत्रता के मूल्यों को पाठ्यचर्या के माध्यम से शिक्षार्थियों में संचारित किया जाता है।

4. **विषयवस्तु की प्रकृति (Nature of Subject Matter):** ज्ञान निरंतर परिवर्तित और परिवर्धित हो रहा है। ज्ञान की प्रत्येक शाखा की अपनी संरचना और तार्किक क्रम होता है। किसी विशिष्ट विषय की जटिलता, उसके व्यावहारिक पहलू और वर्तमान युग के साथ प्रासंगिकता को परखकर ही पाठ्यचर्या की विषयवस्तु निर्धारित की जाती है।
5. **मनोवैज्ञानिक आधार (Psychological Foundations):** शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया पर मनोवैज्ञानिक शोध का प्रभाव अपार है। अधिगम के सिद्धांत, बुद्धि के सिद्धांत और रचनात्मकता का विकास—ये मनोवैज्ञानिक पहलू पाठ्यचर्या विकास के प्रमुख निर्धारक हैं। मनोविज्ञान की सहायता से ही यह निर्धारित किया जाता है कि किसी विषयवस्तु को शिक्षार्थी के लिए कैसे सरल और आकर्षक बनाया जाए।
6. **संसाधन और अवसंरचना (Resources and Infrastructure):** एक आदर्श पाठ्यचर्या के विकास में विद्यालय की अवसंरचना, आवश्यक प्रयोगशालाएं, पुस्तकालय और प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता एक यथार्थवादी निर्धारक के रूप में कार्य करती है।

निष्कर्ष: अंत में यह कहा जा सकता है कि पाठ्यचर्या विकास के ये निर्धारक एक एकीकृत प्रक्रिया का हिस्सा हैं। शिक्षार्थी, समाज, राष्ट्र और मनोविज्ञान के बीच संतुलन बनाए रखना ही पाठ्यचर्या विकास की सार्थकता है। एक वैज्ञानिक और समयानुकूल पाठ्यचर्या ही शिक्षार्थी के समग्र विकास के माध्यम से राष्ट्र की समृद्धि सुनिश्चित कर सकती है। इसलिए, आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पाठ्यचर्या विकास के समय इन निर्धारकों का उचित समन्वय अत्यंत आवश्यक है।

19. Mention the principles of selecting curriculum content. পাঠ্যক্রমের বিষয়বস্তু নির্বাচনের নীতিগুলো উল্লেখ করো। पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु के चयन के सिद्धांतों का उल्लेख कीजिए। **2025**

Ans: प्रस्तावना: शिक्षा प्रक्रिया का केंद्रबिंदु पाठ्यचर्या (Curriculum) है। पाठ्यचर्या की गुणवत्ता काफी हद तक उसके विषयवस्तु (Content) के चयन पर निर्भर करती है। बी.एड. पाठ्यचर्या (ज्ञान और पाठ्यचर्या) के संदर्भ में, उपयुक्त विषयवस्तु का चयन केवल जानकारी का संग्रह नहीं, बल्कि शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास की एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया है। विषयवस्तु का चयन करते समय शिक्षकों और पाठ्यचर्या निर्माताओं को कुछ वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का पालन करना पड़ता है।

पाठ्यचर्या की विषयवस्तु चयन के सिद्धांत:

1. **उद्देश्यपूर्णता का सिद्धांत (Principle of Goal-Orientation):** विषयवस्तु का चयन शिक्षा के लक्ष्यों और उद्देश्यों के अनुरूप होना चाहिए। पाठ्यचर्या की सामग्री ऐसी होनी चाहिए जो शिक्षार्थी में अपेक्षित बदलाव लाने और शिक्षा के मुख्य लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक हो।
2. **उपयोगिता और महत्व का सिद्धांत (Principle of Utility and Significance):** चुनी गई विषयवस्तु का शिक्षार्थी के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के लिए आवश्यक और महत्वपूर्ण होना अनिवार्य है। अप्रासंगिक या केवल सैद्धांतिक विषयों के बजाय, जो वास्तविक जीवन में काम आते हैं, उन्हें प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
3. **मनोवैज्ञानिक सिद्धांत (Principle of Child-Centeredness/Psychological Basis):** विषयवस्तु का चयन शिक्षार्थी की आयु, योग्यता, रुचि, बुद्धि और विकास के स्तर के अनुसार किया जाना चाहिए। कठिन विषयों को सीधे न रखकर सरल से कठिन या मूर्त से अमूर्त—इस मनोवैज्ञानिक क्रम का पालन करना आवश्यक है।
4. **सामाजिक प्रासंगिकता का सिद्धांत (Principle of Social Relevance):** शिक्षा समाज का ही प्रतिबिंब है। इसलिए, विषयवस्तु का चयन वर्तमान सामाजिक व्यवस्था, संस्कृति, परंपराओं और भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए, ताकि शिक्षार्थी एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित हो सके।
5. **समनवय या एकीकरण का सिद्धांत (Principle of Integration):** विषयवस्तु के बीच पारस्परिक संबंध होना आवश्यक है। प्रत्येक विषय को अलग-थलग न होकर एक-दूसरे के पूरक के रूप में कार्य करना चाहिए, तभी शिक्षा का समग्र स्वरूप शिक्षार्थी के सामने स्पष्ट होता है।
6. **सीखने की योग्यता और रचनात्मकता का सिद्धांत (Principle of Learnability and Creativity):** विषयवस्तु सीखने के अनुकूल होनी चाहिए और शिक्षार्थी में रचनात्मक सोच तथा खोजपूर्ण दृष्टिकोण जागृत करनी चाहिए। विषयवस्तु ऐसी होनी चाहिए जो शिक्षार्थी को रटने के बजाय सीखने के लिए प्रेरित करे।
7. **लचीलेपन का सिद्धांत (Principle of Flexibility):** समय के साथ ज्ञान का दायरा और समाज की जरूरतें बदलती रहती हैं। इसलिए, विषयवस्तु का ढांचा इतना लचीला होना चाहिए कि जरूरत पड़ने पर उसे परिमार्जित या परिवर्तित किया जा सके।

www.dascoaching.in

निष्कर्ष: अंत में यह कहा जा सकता है कि पाठ्यचर्या की विषयवस्तु का चयन एक अत्यंत जिम्मेदार कार्य है। उपर्युक्त सिद्धांतों का उचित पालन करने से एक संतुलित और प्रभावी पाठ्यचर्या का निर्माण संभव है। विषयवस्तु का चयन करते समय शिक्षार्थी की आवश्यकता, समाज की अपेक्षा और राष्ट्रीय लक्ष्यों—इन तीनों का सामंजस्य बनाए रखना ही आदर्श पाठ्यचर्या की मुख्य पहचान है। यह केवल पाठ्यपुस्तकों का ज्ञान नहीं, बल्कि शिक्षार्थी के समग्र व्यक्तित्व विकास में सहायक भूमिका निभाता है।

20. Write a short note on "Children`s Psychological Resilience." "শিশুদের মনস্তাত্ত্বিক স্থিতিস্থাপকতা" (Children's Psychological Resilience) বিষয়ে একটি সংক্ষিপ্ত টীকা লেখো।"बच्चों की मनोवैज्ञानिक लचीलापन" (Children's Psychological Resilience) पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। **2025**

Ans: प्रस्तावना: मनोवैज्ञानिक लचीलापन या 'रेज़िलिएंस' प्रतिकूल परिस्थितियों, तनाव, आघात या मानसिक चोट से जल्दी उबरने और अनुकूलन करने की एक जन्मजात मानसिक क्षमता है। बच्चों के मामले में, यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से वे जीवन की विभिन्न जटिल चुनौतियों, पारिवारिक संकटों या व्यक्तिगत विफलताओं से उबरकर सामान्य जीवन में लौटना सीखते हैं। यह कोई स्थिर गुण नहीं है, बल्कि अनुभवों के माध्यम से विकसित होने वाली एक गतिशील प्रक्रिया है।

बच्चों में लचीलापन विकसित करने के पीछे कई महत्वपूर्ण घटक कार्य करते हैं:

1. **सहायक संबंध:** परिवार के सदस्यों, शिक्षकों या दोस्तों के साथ एक मजबूत और प्यार भरे रिश्ते की उपस्थिति बच्चे में आत्मविश्वास पैदा करती है। यह सुरक्षा उसे कठिन समय में टूटने नहीं देती।
2. **समस्या समाधान कौशल:** लचीले बच्चे समस्याओं का सामना करने पर केवल शिकायत नहीं करते, बल्कि समस्या के समाधान के तरीके ढूंढते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में इस कौशल को विकसित करने में शिक्षकों और अभिभावकों की भूमिका निर्विवाद है।
3. **भावनाओं पर नियंत्रण:** अपनी भावनाओं को पहचानने और उन्हें नियंत्रित करने की क्षमता बच्चों को लचीला बनाती है। यह उन्हें कठिन परिस्थितियों में धैर्यवान और शांत रहने में मदद करती है।
4. **सकारात्मक दृष्टिकोण:** किसी भी विफलता को सीखने के अवसर के रूप में स्वीकार करने की मानसिकता और खुद पर विश्वास रखना लचीलेपन की नींव है।

5. **सहनशीलता और अनुकूलनः** पाठ्यक्रम और सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में प्रतिकूलता के साथ तालमेल बिठाने की मानसिकता विकसित की जा सकती है। बी.एड (B.Ed) पाठ्यक्रम के 'ज्ञान और पाठ्यचर्या' (Knowledge and Curriculum) के आलोक में यह कहा जा सकता है कि यदि विद्यालय का वातावरण सहानुभूति और रचनात्मकता पर आधारित हो, तो विद्यार्थियों में लचीलापन बढ़ता है।

निष्कर्ष: अंत में, यह कहा जा सकता है कि बच्चों का मनोवैज्ञानिक लचीलापन उनके स्वस्थ विकास के लिए आवश्यक है। यह न केवल बच्चे को वर्तमान की कठिन परिस्थितियों से लड़ने में मदद करता है, बल्कि भविष्य में एक मानसिक रूप से स्वस्थ और आत्मविश्वासी इंसान के रूप में विकसित होने के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है। परिवार और विद्यालय के संयुक्त प्रयासों से एक सकारात्मक वातावरण बनाकर बच्चों की इस मानसिक शक्ति को और मजबूत किया जा सकता है।

10 Marks Question

1. Write the recommendations of NCFTE-2009 for transacting process-based curriculum in making an ideal teacher. মননশীল শিক্ষক গড়ে তোলার ক্ষেত্রে প্রক্রিয়াভিত্তিক পাঠক্রম বাস্তবায়নের জন্য NCFTE-2009-এর সুপারিশগুলি লিখুন। एक आदर्श शिक्षक के निर्माण में प्रक्रिया-आधारित पाठ्यक्रम को लागू करने हेतु NCFTE-2009 की सिफारिशों को लिखिए। **2018, 2021, 2023**

Ans: प्रस्तावना: शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर टीचर एजुकेशन (NCFTE-2009) एक युगांतरकारी दस्तावेज है। इस दस्तावेज का मुख्य लक्ष्य एक 'चिंतनशील अभ्यासकर्ता' (Reflective Practitioner) या विचारशील शिक्षक तैयार करना है, जो केवल सूचना प्रदाता नहीं, बल्कि छात्र के ज्ञान निर्माण का एक सूत्रधार (Facilitator) हो। प्रक्रिया-आधारित पाठ्यक्रम (Process-based Curriculum) के कार्यान्वयन के माध्यम से शिक्षक के पेशेवर कौशल और रचनात्मकता को बढ़ाने के लिए NCFTE-2009 ने कुछ विशिष्ट सिफारिशें की हैं, जो वर्तमान बी.एड. पाठ्यक्रम के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक हैं।

<u>प्रक्रिया-आधारित पाठ्यक्रम और आदर्श शिक्षक:</u> प्रक्रिया-आधारित पाठ्यक्रम की मुख्य विशेषता यह है कि 'हम क्या सीख रहे हैं' के बजाय 'हम कैसे सीख रहे हैं' पर अधिक महत्व दिया जाता है। एक आदर्श शिक्षक विकसित करने के लिए NCFTE-2009 ने निम्नलिखित सिफारिशें प्रदान की हैं-

1. **रचनावादी दृष्टिकोण (Constructivist Approach):** NCFTE-2009 का मानना है कि शिक्षक प्रशिक्षण केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करने का विषय नहीं है, बल्कि यह ज्ञान निर्माण की एक सक्रिय प्रक्रिया है। प्रशिक्षु शिक्षकों को ऐसे अवसर दिए जाने चाहिए ताकि वे अपने अनुभवों के माध्यम से नए ज्ञान का निर्माण कर सकें। शिक्षक एक 'सुविधाप्रदाता' (Facilitator) होगा, जो छात्र की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करेगा।
2. **मननशील अभ्यास (Reflective Practice):** शिक्षक को एक 'चिंतनशील विचारक' के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। प्रत्येक पाठ के बाद, शिक्षक को अपनी प्रभावशीलता का आत्म-विश्लेषण करना चाहिए। पाठ्यक्रम की सिफारिशों के अनुसार, शिक्षक 'रिफ्लेक्टिव जर्नल' या डायरी लेखन के माध्यम से अपनी गलतियों की पहचान कर सकते हैं और भविष्य की शिक्षण विधियों में सुधार कर सकते हैं।
3. **करके सीखना (Learning by Doing):** शिक्षक प्रशिक्षण में सैद्धांतिक विषयों की तुलना में व्यावहारिक अनुभव पर अधिक जोर दिया गया है। माइक्रो-टीचिंग, सिमुलेशन और शिक्षण अभ्यास (Practice Teaching) के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया को यथार्थवादी बनाने की सिफारिश की गई है। प्रक्रिया-आधारित पाठ्यक्रम में शिक्षक को अपनी शिक्षण शैली के साथ प्रयोग करने की स्वतंत्रता मिलती है।
4. **बहुआयामी मूल्यांकन पद्धति:** प्रक्रिया-आधारित पाठ्यक्रम में केवल परीक्षा परिणामों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय 'सतत और व्यापक मूल्यांकन' (CCE) पर जोर दिया गया है। शिक्षक के प्रदर्शन को परखने के लिए पोर्टफोलियो मूल्यांकन, कार्य की गुणवत्ता का अवलोकन और सहकर्मियों से फीडबैक लेने की व्यवस्था की बात कही गई है।
5. **समावेशन और सामाजिक संवेदनशीलता:** एक आदर्श शिक्षक बनने के लिए सामाजिक संदर्भ को समझना आवश्यक है। NCFTE-2009 ने सिफारिश की है कि पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जिससे शिक्षक समाज के हाशिए पर रहने वाले और पिछड़े बच्चों की जरूरतों को समझ सकें। प्रक्रिया-आधारित पाठ्यक्रम शिक्षक में सहानुभूति और लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास करेगा।

www.dascoaching.in

6. **प्रौद्योगिकी के साथ समन्वयः** वर्तमान युग में आईसीटी (ICT) या तकनीक के उपयोग के बिना प्रक्रिया-आधारित पाठ्यक्रम अधूरा है। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सरल और आकर्षक बनाने के लिए डिजिटल मीडिया और शैक्षिक तकनीक के अनुप्रयोग में शिक्षक के कौशल को बढ़ाने पर जोर दिया गया है।

शिक्षक की भूमिका: एक आदर्श शिक्षक ज्ञान को केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं रखता है। NCFTE-2009 के अनुसार, एक शिक्षक की व्यावसायिकता तभी बनती है जब वह स्वयं को पाठ्यक्रम की प्रक्रिया से जोड़ता है। जब वह समझता है कि शिक्षण निरंतर परिवर्तन की एक प्रक्रिया है, तभी वह छात्र का सही मार्गदर्शन कर सकता है। शिक्षक को अपने हर कदम के तर्क को समझना चाहिए और स्थिति के अनुसार शिक्षण रणनीतियों में बदलाव करना चाहिए। यही एक चिंतनशील शिक्षक की असली पहचान है।

निष्कर्ष: अंत में, यह कहा जा सकता है कि NCFTE-2009 की सिफारिशें केवल नियमों का एक समूह नहीं हैं, बल्कि शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में एक नए दर्शन का उदय हैं। प्रक्रिया-आधारित पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन के माध्यम से जब एक शिक्षक स्वयं सीखना और विश्लेषण करना सीखता है, तभी वह कक्षा में वास्तविक शिक्षा का वातावरण बनाने में सक्षम होता है। बाबा साहेब अंबेडकर शिक्षा विश्वविद्यालय के वर्तमान बी.एड. पाठ्यक्रम के आलोक में इन सिफारिशों का पालन करने से प्रशिक्षु शिक्षक भविष्य में आधुनिक और चिंतनशील शिक्षकों के रूप में स्वयं को स्थापित कर सकेंगे, जो राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता में सुधार लाने में सहायक होगा।

2. Discuss the meritocracy versus elitism in curriculum. পাঠক্রম প্রণয়নে মেধাতন্ত্র বনাম অভিজাততন্ত্র বিষয়টি আলোচনা করুন। पाठ्यक्रम में मेरिटतंत्र बनाम अभिजाततंत्र पर चर्चा कीजिए। **2018, 2020, 2024**

Ans: प्रस्तावना: शिक्षा का मुख्य लक्ष्य छात्र के अंतर्निहित गुणों का विकास करना और उसे समाज निर्माण के योग्य बनाना है। जब पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है, तो वह किस आदर्श पर आधारित होगा—मेधातंत्र (Meritocracy) या अभिजाततंत्र (Elitism)—इसे लेकर शिक्षाविदों के बीच लंबे समय से बहस चल रही है। जहाँ मेधातंत्र व्यक्ति की योग्यता और परिश्रम को प्राथमिकता देता है, वहीं अभिजाततंत्र सामाजिक प्रतिष्ठा और परंपरा को महत्व देता है। पश्चिम बंगाल के BSAEU पाठ्यक्रम के अनुसार इन दोनों अवधारणाओं की तुलनात्मक चर्चा नीचे प्रस्तुत है।

मेधातंत्र (Meritocracy): मेधातंत्र एक ऐसी व्यवस्था है जहाँ छात्र की सफलता उसकी सामाजिक पहचान या वित्तीय स्थिति पर नहीं, बल्कि उसकी अपनी प्रतिभा, बुद्धि और कड़ी मेहनत पर निर्भर करती है।

a) **योग्यता की पहचान:** मेधातांत्रिक पाठ्यक्रम में मेधावी छात्रों की पहचान करने और उन्हें विशेष अवसर प्रदान करने की व्यवस्था होती है। यहाँ $I.Q.$ और कार्यकुशलता ही उत्कृष्टता का पैमाना है।
b) **अवसर की समानता:** यह विश्वास करता है कि प्रत्येक छात्र को समान अवसर दिए जाने चाहिए। जिसकी जितनी क्षमता होगी, वह उतना ही प्राप्त करेगा।
c) **प्रतिस्पर्धा और प्रेरणा:** इस व्यवस्था में पाठ्यक्रम इस तरह से बनाया जाता है जो छात्रों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा करता है और उन्हें बेहतर परिणाम के लिए प्रोत्साहित करता है।
d) **पेशेवर विकास:** आधुनिक तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा में मेधातंत्र का महत्व बहुत अधिक है, क्योंकि यह सही काम के लिए सही व्यक्ति चुनने में मदद करता है।

अभिजाततंत्र (Elitism): अभिजाततंत्र का अर्थ है समाज के एक छोटे और विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा या पाठ्यक्रम को आरक्षित करना। ऐतिहासिक रूप से, इसका उपयोग उच्च वर्ग या उच्च जातियों के प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए किया जाता था।

a) **विशेष पाठ्यक्रम:** अभिजाततंत्रीय पाठ्यक्रम आमतौर पर उच्च स्तर के सैद्धांतिक ज्ञान, शास्त्रीय साहित्य, दर्शन और उच्च गणित पर जोर देता है, जो आम कामकाजी लोगों की पहुँच से बाहर होता है।
b) **सांस्कृतिक पूंजी:** फ्रांसीसी समाजशास्त्री पियरे बोर्दियू के अनुसार, अभिजात वर्ग का पाठ्यक्रम उनकी अपनी संस्कृति और भाषा को प्राथमिकता देता है, जो सामान्य परिवारों के बच्चों के लिए कठिन हो जाता है।
c) **सामाजिक विभाजन:** यह व्यवस्था समाज में दो वर्ग बनाती है—'शासक' और 'शासित'। यह समाज के ऊपरी स्तर के लोगों के लिए अधिकारों का एकाधिकार स्थापित करना चाहता है।
d) **शिक्षण संस्थानों का स्तर:** महंगे निजी स्कूलों या विशिष्ट संस्थानों में ऐसे पाठ्यक्रम का पालन किया जाता है जो केवल उच्च वर्ग के बच्चों के लिए ही सुलभ होता है।

मेधातंत्र बनाम अभिजाततंत्र: पाठ्यक्रम निर्माण के मामले में इन दो अवधारणाओं के बीच सूक्ष्म संघर्ष देखा जाता है-

1. **उद्देश्य में अंतर:** मेधातंत्र प्रतिभा का विकास करके समाज को आगे बढ़ाना चाहता है, जबकि अभिजाततंत्र यथास्थिति बनाए रखकर उच्च वर्ग की शक्ति की रक्षा करना चाहता है।
2. **समावेशिता:** हालाँकि मेधातंत्र सैद्धांतिक रूप से सभी को शामिल करना चाहता है, लेकिन व्यवहार में यह अक्सर कठिन हो जाता है। दूसरी ओर, अभिजाततंत्र जन्मजात रूप से बहिष्कार में विश्वास करता है।
3. **व्यावहारिक अनुप्रयोग:** कई बार यह देखा गया है कि तथाकथित 'मेधातंत्र' वास्तव में 'अभिजाततंत्र' का ही एक रूप है। एक अमीर परिवार के बच्चे को जो ट्यूटर या सुविधाएँ मिलती हैं, वे एक गरीब मेधावी छात्र को नहीं मिल पातीं। परिणामस्वरूप, प्रतिस्पर्धा की शुरुआत में ही असमानता पैदा हो जाती है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, एक आधुनिक लोकतांत्रिक राज्य में पाठ्यक्रम समावेशी (Inclusive) होना चाहिए। केवल मेधातंत्र पर आधारित पाठ्यक्रम बनाने से पिछड़े छात्र प्रतिस्पर्धा में पिछड़ सकते हैं। वहीं अभिजाततंत्रीय पाठ्यक्रम समाज के लोकतंत्र विरोधी है। इसलिए, पश्चिम बंगाल की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में एक ऐसे एकीकृत पाठ्यक्रम की आवश्यकता है, जो छात्र की मेधा का मूल्यांकन करे लेकिन साथ ही सामाजिक और आर्थिक असमानता को दूर कर सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के द्वार खुले रखे। मेधा केवल अवसर की दासी न बनकर अपनी मौलिकता में चमक सके, यही पाठ्यक्रम का मुख्य लक्ष्य होना चाहिए।

3. Establish the relationship between structures of Society and Knowledge. সমাজের গঠন এবং জ্ঞানের মধ্যে সম্পর্ক স্থাপন করুন। समाज की संरचना और ज्ञान के बीच संबंध स्थापित कीजिए। **2019, 2020, 2022**

Ans: प्रस्तावना: समाज और ज्ञान एक-दूसरे के पूरक हैं। समाजशास्त्री पीटर बर्गर और थॉमस लकमैन का मानना है कि ज्ञान एक सामाजिक निर्माण (Social Construction) है। एक विशिष्ट समाज जिस तरह से गठित होता है, उसकी संस्कृति, अर्थव्यवस्था, राजनीति और श्रम विभाजन उस समाज के लोगों द्वारा प्राप्त ज्ञान को सीधे प्रभावित करते हैं। सरल शब्दों में, समाज वह आधार है जहाँ ज्ञान जन्म लेता है, विकसित होता है और संरक्षित होता है।

1. सामाजिक परिप्रेक्ष्य और ज्ञान की प्रकृति: समाज की संरचना के आधार पर ज्ञान की प्रकृति निर्धारित होती है। उदाहरण के लिए:

- **कृषि प्रधान समाज:** यहाँ ज्ञान मुख्य रूप से प्रकृति पर निर्भर होता है, जो मौसम, भूमि और प्राचीन अनुभवों पर आधारित होता है।
- **औद्योगिक समाज:** इस समाज में यांत्रिक ज्ञान, प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की प्रधानता होती है। अर्थात, समाज के बुनियादी ढांचे में बदलाव के साथ ज्ञान की विषय-वस्तु भी बदल जाती है।

2. सत्ता की संरचना और ज्ञान: फ्रांसीसी दार्शनिक मिशेल फूको ने दिखाया है कि **ज्ञान और शक्ति (Knowledge and Power)** अविभाज्य हैं। समाज की शासन सत्ता जिनके हाथों में होती है, वे ही तय करते हैं कि किसे 'ज्ञान' माना जाएगा। पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु का चयन या इतिहास की व्याख्या अक्सर शासक वर्ग की विचारधारा से प्रभावित होती है। परिणामस्वरूप, समाज के उच्च वर्ग या प्रभावशाली वर्ग के दृष्टिकोण को ज्ञान की मुख्य धारा के रूप में मान्यता मिलती है।

3. सामाजिक स्तरीकरण और ज्ञान का वितरण: सामाजिक संरचना के अनुसार ज्ञान सभी स्तरों पर समान रूप से नहीं पहुँचता है।

- **असमान वितरण:** कई समाजों में उच्च वर्ग के लिए उच्च शिक्षा या विशिष्ट ज्ञान और निम्न वर्ग के लिए केवल व्यावसायिक शिक्षा की प्रवृत्ति देखी जाती है।
- **सांस्कृतिक पूंजी:** समाजशास्त्री पियरे बोर्दियू के अनुसार, उच्च वर्गीय परिवारों के बच्चों को विरासत में कुछ ऐसी **सांस्कृतिक पूंजी (Cultural Capital)** मिलती है, जो उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में दूसरों से आगे रखती है।

4. श्रम विभाजन और ज्ञान: आधुनिक समाज में श्रम विभाजन अत्यंत जटिल है। इस जटिल सामाजिक संरचना के कारण ज्ञान अब **अति-विशिष्ट (Super-specialized)** हो गया है। पुराने समय में एक व्यक्ति कई विद्याओं में पारंगत हो सकता था, लेकिन वर्तमान सामाजिक संरचना मनुष्य को किसी एक विशिष्ट विषय (जैसे- डॉक्टर, इंजीनियर, शोधकर्ता) में गहरा ज्ञान प्राप्त करने के लिए मजबूर करती है।

5. सामाजिक परिवर्तन और ज्ञान का विकास: जब समाज अंधविश्वासों से मुक्त होकर आधुनिकता की ओर बढ़ता है, तब ज्ञान का रूपांतरण होता है। जब समाज धर्म-केंद्रित ढांचे से धर्मनिरपेक्ष और वैज्ञानिक

ढांचे की ओर बढ़ता है, तब मानवीय सोच और शिक्षा प्रणाली में तर्कवाद और प्रयोगात्मक ज्ञान का विस्तार होता है।

6. सामाजिक संस्थाएं और ज्ञान: विद्यालय, परिवार, जनसंचार माध्यम और धार्मिक संस्थान समाज के महत्वपूर्ण अंग हैं। ये संस्थाएं ही तय करती हैं कि एक बच्चा समाज के बारे में क्या जानेगा और कैसे जानेगा। इसे **'सामाजिककरण' (Socialization)** की प्रक्रिया कहा जाता है, जिसके माध्यम से सामाजिक आदर्श और मूल्य मानवीय ज्ञान का हिस्सा बन जाते हैं।

निष्कर्ष: अंत में यह कहा जा सकता है कि समाज और ज्ञान एक अविच्छिन्न चक्र की तरह हैं। समाज जिस तरह ज्ञान को रूप देता है, वैसे ही सही ज्ञान समाज सुधार में मदद करता है। दुर्खीम के अनुसार, शिक्षा और ज्ञान का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को समाज के योग्य बनाना है। इसलिए, समाज की संरचना जितनी पारदर्शी और न्यायसंगत होगी, ज्ञान का प्रचार-प्रसार उतना ही निष्पक्ष और सार्वभौमिक होगा। बी.एड पाठ्यक्रम के संदर्भ में भावी शिक्षकों के लिए इस संबंध को समझना आवश्यक है, ताकि वे विविध सामाजिक पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों के बीच ज्ञान का सही संचार कर सकें।

4. What is meant by Curriculum Evaluation? In this context, discuss the micro-level and the macro-level evaluation of the curriculum. পাঠ্যক্রম মূল্যায়ন বলতে কী বোঝায়? এই প্রসঙ্গে মাইক্রো-স্তর মূল্যায়ন এবং ম্যাক্রো-স্তর মূল্যায়ন সম্পর্কে আলোচনা করুন। पाठ्यक्रम मूल्यांकन से आप क्या समझते हैं? इस संदर्भ में पाठ्यक्रम के सूक्ष्म और व्यापक स्तर पर मूल्यांकन की चर्चा करें। **2019, 2021, 2022**

Ans: **प्रस्तावना:** पाठ्यक्रम मूल्यांकन शिक्षा प्रणाली की एक अभिन्न और गतिशील प्रक्रिया है। पाठ्यक्रम लागू होने के बाद उसके लक्ष्यों को किस हद तक हासिल किया गया है, शिक्षण पद्धति कितनी प्रभावी है और छात्रों के सीखने के परिणाम कितने संतोषजनक हैं, इसकी जाँच करने की प्रक्रिया को पाठ्यक्रम मूल्यांकन कहा जाता है। यह केवल छात्र की परीक्षा लेना नहीं है, बल्कि संपूर्ण पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता और उपयोगिता को आंकने की एक वैज्ञानिक पद्धति है। प्रसिद्ध शिक्षाविद् **क्रोनबैक (Cronbach)** के अनुसार, "पाठ्यक्रम मूल्यांकन निर्णय लेने के उद्देश्य से जानकारी एकत्र करने और उपयोग करने की प्रक्रिया है।"

पाठ्यक्रम मूल्यांकन से क्या अभिप्राय है?

पाठ्यक्रम मूल्यांकन एक व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके माध्यम से पाठ्यक्रम की गुणवत्ता, प्रभावशीलता और मूल्य का आकलन किया जाता है। इसके मुख्य उद्देश्य हैं:

- क) पाठ्यक्रम के लक्ष्यों और उद्देश्यों की सटीकता की जाँच करना।
- ख) विषयवस्तु की प्रासंगिकता का परीक्षण करना।
- ग) शिक्षण-अधिगम रणनीतियों की प्रभावशीलता निर्धारित करना।
- घ) छात्र के सर्वांगीण विकास में पाठ्यक्रम की भूमिका का मूल्यांकन करना।

माइक्रो-स्तर मूल्यांकन (Micro-level Evaluation): माइक्रो-स्तर या लघु-स्तर मूल्यांकन से तात्पर्य पाठ्यक्रम के एक विशिष्ट भाग, विशिष्ट विषय या कक्षा के छोटे संदर्भ में मूल्यांकन से है। यह आमतौर पर विशिष्ट इकाइयों (Units) या पाठों पर केंद्रित होता है।

विशेषताएं और चर्चा:

1. **तत्काल प्रतिक्रिया:** जब शिक्षक कक्षा में पढ़ाते हैं, तब वे क्विज़ और प्रश्नोत्तर के माध्यम से छात्रों की समझ की जाँच करते हैं। यह माइक्रो-स्तर के मूल्यांकन का हिस्सा है।
2. **विशिष्ट विषयवस्तु:** यहाँ पूरे पाठ्यक्रम के बजाय किसी विशेष अध्याय या कौशल (जैसे—भाषा शिक्षा या गणित का कोई सूत्र) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।
3. **शिक्षक-छात्र संवाद:** इस मूल्यांकन का मुख्य केंद्र बिंदु कक्षा है। यहाँ शिक्षक की शिक्षण पद्धति और छात्र के सीखने की कमियों की पहचान की जाती है।
4. **प्रतिभागी:** मुख्य रूप से शिक्षक, छात्र और स्थानीय स्कूल अधिकारी इस स्तर के मूल्यांकन में सक्रिय रहते हैं।
5. **शिक्षण सुधार:** इसके माध्यम से शिक्षक समझ सकते हैं कि उनकी शिक्षण पद्धति में किसी बदलाव की आवश्यकता है या नहीं।

मैक्रो-स्तर मूल्यांकन (Macro-level Evaluation): मैक्रो-स्तर या वृहद-स्तर मूल्यांकन से तात्पर्य समग्र पाठ्यक्रम के मूल्यांकन से है। यह आमतौर पर राष्ट्रीय या राज्य स्तर पर बड़े पैमाने पर आयोजित किया जाता है।

विशेषताएं और चर्चा:

1. **व्यापकता:** यहाँ किसी विशिष्ट अध्याय की नहीं, बल्कि पूरे शैक्षणिक वर्ष या एक विशिष्ट स्तर (जैसे—प्राथमिक या उच्च माध्यमिक) के संपूर्ण पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता का आकलन किया जाता है।
2. **नीति निर्धारण:** मैक्रो-स्तर के मूल्यांकन के परिणामों के आधार पर सरकारी नीतियों या शिक्षा नीतियों में बदलाव किया जाता है।
3. **सामाजिक और राष्ट्रीय लक्ष्य:** यहाँ यह देखा जाता है कि पाठ्यक्रम देश की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुरूप है या नहीं।
4. **प्रतिभागी:** इस प्रक्रिया में विशेषज्ञ समितियाँ, शिक्षा बोर्ड (जैसे—WBBSE, WBCHSE), एनसीईआरटी (NCERT) और सरकारी नीति निर्माता शामिल होते हैं।
5. **दीर्घकालिक प्रभाव:** यह मूल्यांकन आमतौर पर कुछ वर्षों के अंतराल पर किया जाता है और इसका उद्देश्य पाठ्यक्रम में आमूल-चूल सुधार या आधुनिकीकरण करना होता है।

माइक्रो और मैक्रो स्तर की तुलना:

विशेषता	माइक्रो-स्तर (Micro-level)	मैक्रो-स्तर (Macro-level)
कार्यक्षेत्र	सीमित और विशिष्ट (कक्षा केंद्रित)	विस्तृत और समग्र (राष्ट्रीय स्तर)
समयावधि	अल्पकालिक और नियमित	दीर्घकालिक
उद्देश्य	तत्काल शिक्षण सुधार	शिक्षा नीति और बुनियादी ढांचे में बदलाव
प्रयोग	व्यक्तिगत या स्थानीय स्तर	सामूहिक या राजकीय स्तर

निष्कर्ष: अंततः यह कहा जा सकता है कि पाठ्यक्रम मूल्यांकन एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। माइक्रो-स्तर और मैक्रो-स्तर—दोनों ही एक-दूसरे के पूरक हैं। माइक्रो-स्तर के मूल्यांकन के माध्यम से जहाँ दैनिक शिक्षा की गुणवत्ता बनाए रखी जा सकती है, वहीं मैक्रो-स्तर के मूल्यांकन के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा के आदर्शों को साकार करना संभव होता है। एक प्रभावी शिक्षा प्रणाली बनाने के लिए इन दोनों स्तरों के मूल्यांकन के बीच संतुलन होना अत्यंत आवश्यक है। उचित मूल्यांकन के बाद ही एक पाठ्यक्रम आधुनिक समय की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनता है।

www.dascoaching.in

5. Write a brief account on the critical analysis of Text book. পাঠ্যপুস্তকের সমালোচনামূলক বিশ্লেষণের উপর একটি সংক্ষিপ্ত বিবরণ লিখুন। पाठ्यपुस्तक की समालोचनात्मक समीक्षा पर एक संक्षिप्त विवरण लिखिए। **2023, 2025**

Ans: <u>प्रस्तावना:</u> शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक अनिवार्य तत्व पाठ्यपुस्तक है। यह केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं है, बल्कि एक विशिष्ट पाठ्यक्रम के लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूरा करने का एक प्रभावी माध्यम है। पाठ्यपुस्तक के आलोचनात्मक विश्लेषण का अर्थ है पुस्तक की विषयवस्तु, संरचना, लैंगिक निष्पक्षता, मूल्यों और छात्रों के बौद्धिक स्तर के साथ उसके सामंजस्य का निष्पक्ष रूप से सत्यापन करना। एक आदर्श पाठ्यपुस्तक छात्र की चिंतन शक्ति को उद्दीपित करती है और सही ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करती है।

<u>पाठ्यपुस्तक विश्लेषण के मुख्य पहलू:</u> पाठ्यपुस्तक के आलोचनात्मक विश्लेषण के मामले में निम्नलिखित क्षेत्रों को महत्व के साथ आंका जाता है-

1. **विषयवस्तु की सटीकता और प्रासंगिकता:** यह देखा जाता है कि पाठ्यपुस्तक में दी गई जानकारी कितनी सटीक है और आधुनिक शोध के साथ कितनी सुसंगत है। विषयवस्तु छात्र के दैनिक जीवन के लिए प्रासंगिक होनी चाहिए और पाठ्यक्रम (Curriculum) के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
2. **लैंगिक भेदभाव और सामाजिक निष्पक्षता:** आलोचनात्मक विश्लेषण का एक बड़ा पहलू यह जांचना है कि पुस्तक में कोई लैंगिक पूर्वाग्रह (Gender Bias) तो नहीं है। उदाहरण के लिए, यह गहराई से विश्लेषण किया जाता है कि पाठ्यपुस्तक के चित्रों या कहानियों में केवल पुरुषों को ही साहसी या मेहनती के रूप में दिखाया गया है, या किसी विशेष जाति या धर्म को छोटा तो नहीं दिखाया गया है।
3. **भाषा और प्रस्तुति:** पाठ्यपुस्तक की भाषा सरल, सहज और छात्रों के लिए बोधगम्य होनी चाहिए। वाक्य संरचना जटिल नहीं होनी चाहिए और कठिन शब्दों की उचित व्याख्या होनी चाहिए। प्रस्तुति की शैली ऐसी होनी चाहिए जो छात्र के मन में जिज्ञासा पैदा कर सके।
4. **क्रमिक विन्यास (Organization):** यह देखा जाता है कि अध्याय 'सरल से कठिन' के क्रम में व्यवस्थित हैं या नहीं। प्रत्येक खंड के अंत में सारांश और पर्याप्त उदाहरणों का होना आवश्यक है।
5. **दृश्य तत्व (Visual Elements):** पुस्तक का आवरण (Cover), मुद्रण की गुणवत्ता, उपयोग किए गए मानचित्र, डिजाइन या चार्ट कितने स्पष्ट और विषयवस्तु से संबंधित हैं, यह विश्लेषण में शामिल है। (यद्यपि इस उत्तर में चित्र वर्जित हैं, लेकिन विश्लेषण में दृश्य गुणवत्ता का आकलन अनिवार्य है)।

6. **मूल्यांकन और अभ्यास:** यह देखा जाता है कि प्रत्येक अध्याय के अंत में दिए गए प्रश्न छात्रों की केवल रटने की क्षमता को नहीं, बल्कि उनकी रचनात्मकता और उच्च-स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS) की जाँच कर रहे हैं या नहीं।

शैक्षिक महत्व: पाठ्यपुस्तक विश्लेषण प्रशिक्षु शिक्षकों (Teacher Trainees) के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से शिक्षक समझ सकते हैं कि-

- पाठ्यपुस्तक के किसी भाग में संशोधन की आवश्यकता है या नहीं।
- छात्रों की विविध आवश्यकताओं के अनुसार पुस्तक कितनी उपयोगी है।
- कक्षा में पढ़ाते समय किस अतिरिक्त जानकारी या शिक्षण अधिगम सामग्री (TLM) का उपयोग किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष: अंततः यह कहा जा सकता है कि पाठ्यपुस्तक का आलोचनात्मक विश्लेषण केवल कमियां खोजने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार की एक पद्धति है। एक सु-विश्लेषित पाठ्यपुस्तक छात्रों में लोकतांत्रिक मूल्यों, धर्मनिरपेक्षता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करती है। बी.एड पाठ्यक्रम का यह विषय शिक्षकों को विवेकशील और जागरूक बनाता है, जो भविष्य में एक समावेशी शिक्षा प्रणाली (Inclusive Education) के निर्माण में सहायक होता है।

6. Critically discuss the curriculum of Secondary and Higher-Secondary Stage in West Bengal. পশ্চিমবঙ্গে মাধ্যমিক ও উচ্চমাধ্যমিক স্তরে শিক্ষা পাঠক্রমের পর্যালোচনা করুন। पश्चिम बंगाल में माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम की आलोचनात्मक चर्चा कीजिए। **2024**

Ans: प्रस्तावना: शिक्षा की गुणवत्ता एक मजबूत और समकालीन पाठ्यक्रम पर निर्भर करती है। पश्चिम बंगाल में माध्यमिक (9वीं-10वीं) और उच्च माध्यमिक (11वीं-12वीं) स्तर का पाठ्यक्रम लाखों छात्रों के भविष्य का निर्माण करता है। हालांकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) और NCF के दिशानिर्देशों के अनुसार समय-समय पर इस पाठ्यक्रम में सुधार किया जाता है, लेकिन इसके सकारात्मक पहलू और सीमाएं दोनों मौजूद हैं। वर्तमान चर्चा में इन दोनों स्तरों के पाठ्यक्रम का एक संक्षिप्त आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम की समीक्षा (WBBSE): पश्चिम बंगाल का माध्यमिक स्तर का पाठ्यक्रम मुख्य रूप से सामान्य प्रकृति का है और यह सभी छात्रों के लिए अनिवार्य बुनियादी विषयों पर आधारित है।

सकारात्मक पक्ष:

- **एकीकृत दृष्टिकोण:** पाठ्यक्रम में साहित्य, विज्ञान, गणित और सामाजिक विज्ञान के बीच संतुलन बनाने का प्रयास किया गया है। यह जीवनशैली शिक्षा और पर्यावरण जागरूकता पर जोर देता है।
- **सुबोधता:** वंचित स्तर के छात्रों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यपुस्तकों की भाषा को सरल और सुगम बनाने का प्रयास किया गया है।

सीमाएं और आलोचना:

- **भारी पाठ्यक्रम:** सात अनिवार्य विषयों का सिलेबस काफी लंबा है, जो अक्सर छात्रों पर मानसिक दबाव पैदा करता है।
- **रटने पर निर्भरता:** पाठ्यक्रम इस तरह से व्यवस्थित है कि रचनात्मक सोच के बजाय रटकर अंक प्राप्त करने की प्रवृत्ति अधिक रहती है।
- **व्यावसायिक शिक्षा का अभाव:** सामान्य विषयों के साथ-साथ तकनीकी या व्यावसायिक शिक्षा के अवसर यहाँ अत्यंत सीमित हैं।

उच्च माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम की समीक्षा (WBCHSE): उच्च माध्यमिक स्तर विशेषज्ञता (Specialization) का चरण है, जहाँ छात्र विज्ञान, कला या वाणिज्य शाखाओं में से विषयों का चयन करते हैं।

सकारात्मक पक्ष:

- **सेमेस्टर प्रणाली की शुरुआत (2024-25):** वर्तमान में सेमेस्टर प्रणाली लागू होने से छात्रों पर एकमुश्त परीक्षा का दबाव कम हो रहा है और नियमित पढ़ने की आदत बढ़ रही है।
- **प्रतियोगी परीक्षाओं के साथ तालमेल:** विज्ञान शाखा के पाठ्यक्रम को CBSE के समकक्ष बनाया गया है, जिससे राज्य के छात्रों को JEE या NEET जैसी अखिल भारतीय परीक्षाओं में सुविधा मिल रही है।
- **विषयों की विविधता:** छात्रों की पसंद के अनुसार विषय चुनने के लिए यहाँ कई विकल्प (Electives) रखे गए हैं।

सीमाएं और आलोचना:

- **कला और वाणिज्य शाखा की उपेक्षा:** विज्ञान का सिलेबस जितना आधुनिक बनाया गया है, कला या वाणिज्य के कई विषयों में उस तुलना में समकालीन परिवर्तन या व्यावहारिक पहलुओं की कमी दिखती है।
- **प्रायोगिक कक्षाओं की कमी:** पाठ्यक्रम में प्रोजेक्ट और प्रैक्टिकल होने के बावजूद ग्रामीण स्कूलों में बुनियादी ढांचे के अभाव के कारण छात्रों को व्यावहारिक रूप से सीखने का अवसर कम मिलता है।

समग्र आलोचनात्मक विश्लेषण

1. **मूल्यांकन पद्धति:** दोनों स्तरों पर निरंतर और व्यापक मूल्यांकन (CCE) की बात कही गई है, लेकिन वास्तविकता में यह केवल प्रोजेक्ट के अंक वितरण तक ही सीमित रह गया है।
2. **लैंगिक जागरूकता और समावेश:** पाठ्यक्रम में लैंगिक भेदभाव दूर करने का प्रयास किया गया है, लेकिन समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) का वास्तविक प्रतिबिंब कक्षाओं में बहुत कम दिखता है।
3. **सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग:** 21वीं सदी की मांग की तुलना में पाठ्यक्रम में ICT का प्रयोग अभी भी पर्याप्त नहीं है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, पश्चिम बंगाल का माध्यमिक और उच्च माध्यमिक पाठ्यक्रम पारंपरिक शिक्षा के साथ आधुनिक शिक्षा का मेल कराने का प्रयास कर रहा है। सेमेस्टर प्रणाली की शुरुआत एक साहसी और सकारात्मक कदम है। हालाँकि, यदि पाठ्यक्रम को केवल अंक-केंद्रित न रखकर अधिक जीवन-उन्मुख, व्यावसायिक और कौशल-आधारित (Skill-based) बनाया जाए, तभी यह वैश्वीकरण के युग में छात्रों को सही मायने में आत्मनिर्भर बनाएगा। BSAEU के एक भावी शिक्षक के रूप में, हमारे पेशेवर विकास के लिए पाठ्यक्रम के इन पहलुओं को जानना अनिवार्य है।

www.dascoaching.in

7. Mention the principles of curriculum development with reference to the objectives of NCFTE-2029. NCFTE-2029-এর উদ্দেশ্যগুলির প্রেক্ষাপটে পাঠ্যক্রম উন্নয়নের নীতিগুলি উল্লেখ করুন। NCFTE-2029 के उद्देश्यों के संदर्भ में पाठ्यक्रम विकास के सिद्धांतों का उल्लेख कीजिए। **2025**

Ans: **<u>प्रस्तावना:</u>** शिक्षा की गुणवत्ता और प्रासंगिकता एक सुनियोजित पाठ्यक्रम पर निर्भर करती है। पाठ्यक्रम विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जो छात्रों के विकास, सामाजिक आवश्यकताओं और राष्ट्रीय लक्ष्यों के समन्वय से बनती है। **NCFTE-2029 (शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा)** शिक्षक शिक्षा के आधुनिकीकरण में एक मील का पत्थर है। इस ढांचे का मुख्य लक्ष्य शिक्षकों को इस तरह तैयार करना है कि वे 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना कर सकें। पाठ्यक्रम विकास के विभिन्न सिद्धांत और NCFTE-2029 के उद्देश्य एक-दूसरे के पूरक हैं।

<u>पाठ्यक्रम विकास के मुख्य सिद्धांत:</u> पाठ्यक्रम विकास के मामले में कुछ मौलिक सिद्धांतों का पालन किया जाता है-

1. **लक्ष्य-उन्मुखता का सिद्धांत:** पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो शिक्षा के विशिष्ट लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करे।
2. **लचीलेपन का सिद्धांत:** समय की मांग और छात्रों की विविधता के अनुसार पाठ्यक्रम में बदलाव की गुंजाइश होनी चाहिए।
3. **सामाजिक प्रासंगिकता का सिद्धांत:** समाज और संस्कृति के मूल्यों के साथ पाठ्यक्रम का तालमेल होना आवश्यक है।
4. **समन्वय और एकीकरण का सिद्धांत:** विभिन्न विषयों के बीच अंतर्संबंध बनाए रखते हुए समग्र ज्ञान प्रदान करने का प्रयास किया जाना चाहिए।
5. **जीवन-केंद्रितता का सिद्धांत:** केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक कार्य और वास्तविक जीवन के अनुभवों का प्रतिबिंब होना चाहिए।
6. **समानता और समावेश का सिद्धांत:** विशेष आवश्यकता वाले छात्रों सहित सभी के लिए समान अवसर सुनिश्चित किए जाने चाहिए।

www.dascoaching.in

<u>NCFTE-2029 के उद्देश्य और पाठ्यक्रम विकास का संबंध:</u> NCFTE-2029 का लक्ष्य शिक्षक प्रशिक्षण को अधिक आधुनिक और तकनीकी रूप से कुशल बनाना है। इसके उद्देश्यों के आलोक में पाठ्यक्रम विकास के सिद्धांतों को निम्नानुसार देखा जा सकता है-

क) व्यावसायिक विकास: NCFTE-2029 का एक मुख्य उद्देश्य शिक्षकों के व्यावहारिक ज्ञान में वृद्धि करना है। इसलिए पाठ्यक्रम विकास में 'एक्शन रिसर्च' और इंटर्नशिप को विशेष महत्व दिया जा रहा है, जो 'अनुभव-आधारित शिक्षा के सिद्धांत' का पालन करता है।

ख) तकनीकी एकीकरण: आधुनिक शिक्षा में ICT अनिवार्य है। NCFTE-2029 के अनुसार, पाठ्यक्रम में डिजिटल साक्षरता और आधुनिक सॉफ्टवेयर के उपयोग को शामिल किया गया है, जो 'आधुनिकीकरण के सिद्धांत' का प्रतिबिंब है।

ग) समावेशी शिक्षा: NCFTE-2029 सभी छात्रों के लिए शिक्षा के समान अवसर की बात करता है। पाठ्यक्रम इस तरह तैयार किया जा रहा है कि शिक्षक विविध कक्षाओं में आसानी से ढल सकें, जो 'समानता और समावेश के सिद्धांत' से सीधे जुड़ा है।

घ) मूल्य और नैतिकता: शिक्षकों के नैतिक गुणों और सामाजिक जिम्मेदारी को बढ़ाने के लिए मानवीय और मूल्य-आधारित शिक्षा को पाठ्यक्रम के केंद्र में रखा गया है, जो 'सामाजिक प्रासंगिकता के सिद्धांत' को मजबूत करता है।

ङ) मूल्यांकन पद्धति: NCFTE-2029 पारंपरिक परीक्षाओं की तुलना में रचनात्मक मूल्यांकन पर जोर देता है। पाठ्यक्रम विकास में निरंतर और व्यापक मूल्यांकन (CCE) पद्धति का पालन किया जा रहा है, जो छात्र की रचनात्मकता के विकास के सिद्धांत का सम्मान करता है।

<u>निष्कर्ष:</u> अंत में यह कहा जा सकता है कि पाठ्यक्रम विकास कोई स्थिर प्रक्रिया नहीं बल्कि गतिशील है। NCFTE-2029 के उद्देश्यों ने पाठ्यक्रम विकास को केवल सूचना-आधारित नहीं, बल्कि कौशल-आधारित और सेवा-उन्मुख बना दिया है। शिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन और छात्रों के समग्र विकास में यह नया पाठ्यक्रम दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण है। पाठ्यक्रम विकास के मौलिक सिद्धांतों को अपनाते हुए यदि NCFTE-2029 के लक्ष्यों को पूरा किया जा सके, तो हम भविष्य में एक आधुनिक और मजबूत शिक्षा प्रणाली बनाने में सक्षम होंगे।

www.dascoaching.in

*****

आपको यह ई-बुक कैसी लगी, या यदि आपके पास कोई फीडबैक या सुझाव है, तो कृपया नीचे दिए गए संचार माध्यमों से हमें बताएं या नीचे दिए गए गूगल फॉर्म को भरें। हमें आपके फीडबैक का इंतज़ार रहेगा!

Email: contact.dascoaching@gmail.com
WhatsApp / Arattai: +91 9339697099

FOLLOW OUR WEBSITE REGULARLY FOR MORE UPDATE

www.dascoaching.in Or, https://bedcourse.dascoaching.in/

Send Your Feedback (Your feedback inspires our progress.)>> **Feedback Here**

📢 **Join Our Community**

Stay connected with "**DAS Coaching**" on your favourite platform:

📱 **Join DAS Coaching Official Channel (Arattai)** 📢

Thank You

www.dascoaching.in

DAS Coaching Standard Copyright & Disclaimer

Copyright © 2026 DAS Coaching (Education Service)

All Rights Reserved.

*This publication is the intellectual property of **DAS Coaching (Education Service).***

No part of this publication may be copied, reproduced, stored, translated, distributed, transmitted, or published in any form or by any means, whether electronic, digital, mechanical, photocopying, recording, or otherwise, without prior written permission from the publisher, except where permitted under applicable copyright law.

This material has been prepared solely for educational and academic purposes. While every effort has been made to ensure the accuracy and quality of the content, readers are encouraged to consult official university notifications, syllabus updates, and academic guidelines wherever applicable.

*Some language editing, formatting, and translation support may have been provided using Artificial Intelligence (AI)-assisted tools. However, the final content, editorial review, academic structure, and publication have been prepared, verified, and approved by **DAS Coaching.***

The publisher shall not be held responsible for any direct or indirect loss arising from the use of this publication.

Publisher

DAS Coaching (Education Service)

🌐 ***Website:*** *https://dascoaching.in*

📧 ***Email:*** *contact.dascoaching@gmail.com*

www.dascoaching.in